



SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

नव इन्द्रप्रस्थ

2023 ★ चतुर्थ अंक

मूल्य:
राजभाषा
के प्रति
निष्ठा

कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा,
उद्योग एवं कॉर्पोरेट कार्य,
ए.जी.सी.आर.भवन, आई.पी. एस्टेट,
नई दिल्ली - 110002



नव इन्द्रप्रस्थ

मूल्य: राजभाषा के प्रति निष्ठा

चतुर्थ अंक

वर्ष - 2023

कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा,
उद्योग एवं कॉर्पोरेट कार्य,
ए.जी.सी.आर.भवन, आई.पी. एस्टेट,
नई दिल्ली - 110002

नव इन्द्रप्रस्थ

2023 ♦ चतुर्थ अंक

पत्रिका-परिवार

संरक्षक

श्रीमती एस. आह्लादिनी पंडा
प्रधान निदेशक (लेखापरीक्षा)

परामर्शदाता

श्री हर्ष कपूर
निदेशक (प्रशासन)

संपादक

श्री राजबीर
हिंदी अधिकारी

सह-संपादक

श्री मोनू जांगिड़
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा, उद्योग एवं कॉर्पोरेट कार्य,
ए.जी.सी.आर. भवन, आई.पी. एस्टेट, नई दिल्ली - 110002

नोट: इस पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार रचनाकारों के अपने विचार हैं। नव इन्द्रप्रस्थ परिवार का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। रचनाओं की मौलिकता, उसमें प्रस्तुत तथ्यों तथा आंकड़ों की प्रमाणिकता के लिए रचनाकार स्वयं उत्तरदायी हैं।

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	रचना	लेखक/रचनाकार	पृष्ठ सं.
1	हुनर	अनिल कुमार	1
2	शीर्षस्थ से अधीनस्थ तक	राजबीर	2
3	माँ	मानवेन्द्र झा	5
4	ऊँचा नहीं गगन कोई	समीर आसिफ	7
5	द्रौपदी (कृष्ण की सबला)	हेमलता शर्मा	8
6	किसान की आत्महत्या	रोहित माथुर	10
7	पुरुष की कामयाबी में स्त्री का महत्व: स्त्री के लिए सार्थकता	कविता शर्मा	12
8	अनाश्रित बच्चे	गीतांजलि	16
9	स्वार्थ के परिणाम	अनिल कुमार	18
10	क्या कहूँ गरीब हूँ तो रिकशा चलाता हूँ	रामजी सिंह	20
11	शगोल-काङ्जै	संजीव कुमार	21
12	कोरोना-काल	कविता शर्मा	22
13	निर्वाण कथा	नवीन	25
14	आनंद की खोज	नवीन	29
15	कोई रोड़ पर ना और कोई रोए ना	मोहन चन्द्र	30
16	देखो सरस्वती पूजा आई	रामप्रकाश चौधरी	33
17	उपवन-सौंदर्य	देवेश नारायण गुप्ता	36
18	डर	अनिता कुमारी	37
19	एल.टी.सी. और पूर्वोत्तर की यात्रा	रामप्रकाश चौधरी	38
20	आज तमाचा मेरे गाल पर	गीतांजलि	41
21	हिंदी भाषा: उद्भव एवं विकास	मानवेन्द्र झा	42
22	जीवन-चक्र: एक फल की जुबानी	मोनू जांगिड़	45



श्रीमती एस. आह्लादिनी पंडा
प्रधान निदेशक (लेखापरीक्षा)

संदेश

यह अत्यंत प्रसन्नता का विषय है कि हमारे कार्यालय की नव इन्द्रप्रस्थ पत्रिका का चतुर्थ अंक प्रकाशित किया जा रहा है।

राजभाषा हिंदी के विकास और प्रचार-प्रसार में हिंदी पत्रिकाओं की महत्वपूर्ण भूमिका है। इन पत्रिकाओं से न केवल कार्मिकों में राजभाषा कार्यान्वयन के प्रति अनुकूल वातावरण का निर्माण होता है बल्कि कार्मिकों को अपनी सृजनात्मक प्रतिभा को अभिव्यक्त करने का अवसर भी मिलता है। मुझे विश्वास है कि पत्रिका के प्रकाशन से संघ सरकार की राजभाषा नीति को बढ़ावा मिलेगा एवं राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी लक्ष्यों को प्राप्त करने में सफल होंगे।

पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

र.स.र.पं.

एस. आह्लादिनी पंडा
प्रधान निदेशक (लेखापरीक्षा)

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest



श्री हर्ष कपूर
निदेशक (प्रशासन)

संदेश

कार्यालय की हिंदी पत्रिका नव इन्द्रप्रस्थ का चतुर्थ अंक प्रकाशित करना मेरे लिए एक सुखद अनुभव है। राजभाषा के प्रचार-प्रसार में इन पत्रिकाओं के माध्यम से कार्यालय के कार्मिकों में रचनात्मक वातावरण का निर्माण होता है तथा वे कार्मिकों के सामर्थ्य को दर्शाती है।

आज आवश्यकता है पूरे आत्मविश्वास के साथ सरकारी कामकाज हिंदी में किये जाने की, आवश्यकता है राजभाषा विभाग द्वारा समय-समय पर जारी आदेशों की पूर्ण रूप से अनुपालना करने एवं वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों की शत-प्रतिशत प्राप्ति की।

इस पत्रिका के सफल प्रकाशन एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

हर्ष कपूर
निदेशक (प्रशासन)

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा

Dedicated to Truth in Public Interest



श्री राजबीर
हिंदी अधिकारी

संपादक की कलम से...

कार्यालय पत्रिका नव इन्द्रप्रस्थ का चुतर्थ अंक आप सभी के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे प्रसन्नता हो रही है जिसमें कार्यालय के कार्मिकों ने अपनी रचनाओं को बड़ी तन्मयता से शामिल किया है। केंद्र सरकार के प्रत्येक कार्मिक का यह दायित्व है कि वे अधिक से अधिक कार्य हिंदी में करें। किसी भाषा को तकनीकी ज्ञान से जोड़ना भाषा का संवर्धन करना है। हिंदी के ई-टूल्स (लीला हिंदी प्रवाह, शब्द सिंधु, कंठस्थ, प्रवाचक, ई महाशब्दकोश, सीएसटीटी प्रशासनिक शब्दानवली, इनस्क्रिप्ट की बोर्ड आदि) के अधिकाधिक प्रयोग से हिंदी में कार्य की गति को बढ़ाया जा सकता है। इन टूल्स आदि की सहायता से हम हिंदी के काम को अधिक आसानी एवं सुगमता से कम समय में अधिक कार्य कर सकते हैं इन सभी का उपयोग करके हम हिंदी के कार्य को अधिक तत्परता से करने के लिए तैयार हो सकते हैं।

आवश्यकता है समय के अनुसार आगे बढ़ने की, देशप्रेम एवं दृढ़ निश्चय की, प्रत्येक व्यक्ति सीमाओं पर जाकर ही देश की सेवा नहीं कर सकता है। प्रत्येक कार्मिक यदि अपना प्रशासनिक, वित्तीय एवं लेखा आदि से संबंधित कार्य अपने देश की राजभाषा में करता है तो वह एक सच्चे देशप्रेम की भावना को दर्शाता है किसी भी देश का विकास उस देश की भाषा में काम करने पर निर्भर करता है। यदि हम चाहते हैं कि हमारा देश निरंतर आगे बढ़े और अधिक मजबूत बने तो हमें संघ का कामकाज में अधिकाधिक हिंदी में प्रयोग करना होगा। तभी हम सशक्त भारत, सशक्त राजभाषा की परिकल्पना कर सकते हैं।

राजभाषा के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए संघ सरकार की राजभाषा नीति, अधिनियम, नियम एवं आदेशों/दिशानिर्देशों के अनुरूप कार्य करें। जब प्रत्येक कार्मिक के मन में देशप्रेम की भावना जागृत होती है तो स्वाभाविक रूप से देश प्रत्येक क्षेत्र में उन्नति के शिखर की ओर बढ़ेगा।

पत्रिका के इस अंक के लिए आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएं। आप अपने बहुमूल्य सुझावों/प्रतिक्रियाओं से अवश्य अवगत कराएं ताकि आगामी अंकों को अधिक बेहतर, आकर्षक एवं उपयोगी बनाया जा सके एवं राजभाषा हिंदी के प्रभावी कार्यान्वयन की निरंतर गुणात्मकता सुनिश्चित की जा सके।

राजबीर
हिंदी अधिकारी



अनिल कुमार
(वरिष्ठ लेखापरीक्षक)

हुनर

ना हो उदास, ना हो निराश,
एक तो हुनर है तेरे पास।
मंजिल दूर तो क्या,
कल होगी तेरे पास।
ना हो उदास, ना हो निराश,
एक हुनर है तेरे पास।

दूर क्षितिज पर लक्ष्य है,
और एक चट्टान तेरे समक्ष है।
चीर कर निकलेगा तू,
साहस है तेरे पास।
ना हो उदास, ना हो निराश,
एक हुनर है तेरे पास।

क्षत-विक्षत शरीर है,
दिन-प्रतिदिन बढ़ता पीर है।
पर अड़िग रहना तू,
जब तक है अंतिम श्वास।
ना हो उदास, ना हो निराश,
एक हुनर है तेरे पास।

पथ बड़ा विकट है,
राह में कई संकट हैं।
सफलता मिलेगी तुझे,
बस निरंतर रहे प्रयास।
ना हो उदास, ना हो निराश,
एक हुनर है तेरे पास।



राजबीर

(हिंदी अधिकारी)

शीर्षस्थ से अधीनस्थ तक

व्यक्ति किसी भी विभाग या कार्यालय में भर्ती होने के लिए जब परीक्षा की तैयारी बड़ी लग्न एवं मेहनत से करता है। उसके द्वारा की गई कड़ी मेहनत एवं लग्न के परिणाम से अलग ही आनंद एवं संतुष्टि होती है। किसी विभाग या कार्यालय में कार्यभार ग्रहण करने पर उसकी सोच सकारात्मक होती है एवं वह नव युवक होते हुए ऊर्जावान भी होता है वह सोचता है कि मैं प्रशिक्षित होकर अपने कर्तव्यों का निर्वाहन अनुशासन से करूँ एवं स्वयं तथा अपने विभाग के लिए निरंतर प्रगति करूँ। प्रारंभ में यह सोच स्वाभाविक है। अब प्रश्न उठता है कि हम उस सोच को कब तक अपने हृदय में संजोये रखते हैं? कब तक अपने कर्तव्यों के निष्पादन पर खरा उतरने का प्रयास करते हैं? कितने व्यक्ति इस भावना से काम करते हैं? इसके लिए सर्वप्रथम अपने कर्तव्यों एवं विभाग की प्रकृति एवं रूप रेखा से अवगत होना अनिवार्य है ताकि उसके अनुसार हम अपने कर्तव्यों की योजना तैयार कर सकें। उसके बाद अपनी योजना को लागू करने हेतु सघन प्रयास करने चाहिए। समय-समय पर निरंतर रूप से प्रशिक्षण प्राप्त करके अपने कौशल में सुधार लाने की आवश्यकता है। यह आवश्यक नहीं है कि आप सभी लक्ष्यों को शत प्रतिशत प्राप्त कर पायेंगे या नहीं क्योंकि यह सब समय एवं परिस्थितियों के अनुरूप निर्भर करता है। कार्यालय/अनुभाग में आपके सहकर्मी एवं अधिकारी किस तरह से काम करते हैं? काम करने के प्रति कैसी सोच रखते हैं? सृजनात्मक रूप से काम करने के प्रति उनका रवैया कैसा है? आपके आसन्न अधिकारी कैसे हैं? क्या वे सृजनात्मक ढंग से कार्यों के पक्षधर हैं या नहीं? क्या वे सब कुछ आपके ऊपर ही छोड़ देना चाहते हैं? क्या वे अनुभव एवं सृजनात्मकता से अपना सामंजस्य स्थापित करने की योग्यता रखते हैं? क्या वे आपके द्वारा किये गए बेहतर कार्यों के लिए आपको प्रोत्साहित करते हैं? इसके लिए विभाग या कार्यालय आदि के उच्च अधिकारी वर्ग का भी रोल मॉडल के रूप में काम करना अपने विभाग की प्रगति में महत्वपूर्ण भूमिका सुनिश्चित करता है। कार्यालयों के कुछ ऐसे कार्यों में से एक कार्य संघ सरकार की राजभाषा से भी संबंधित है जिनको कुछ विभाग, कार्यालय, अधिकारी या कार्मिक कार्यालय की महत्वपूर्ण

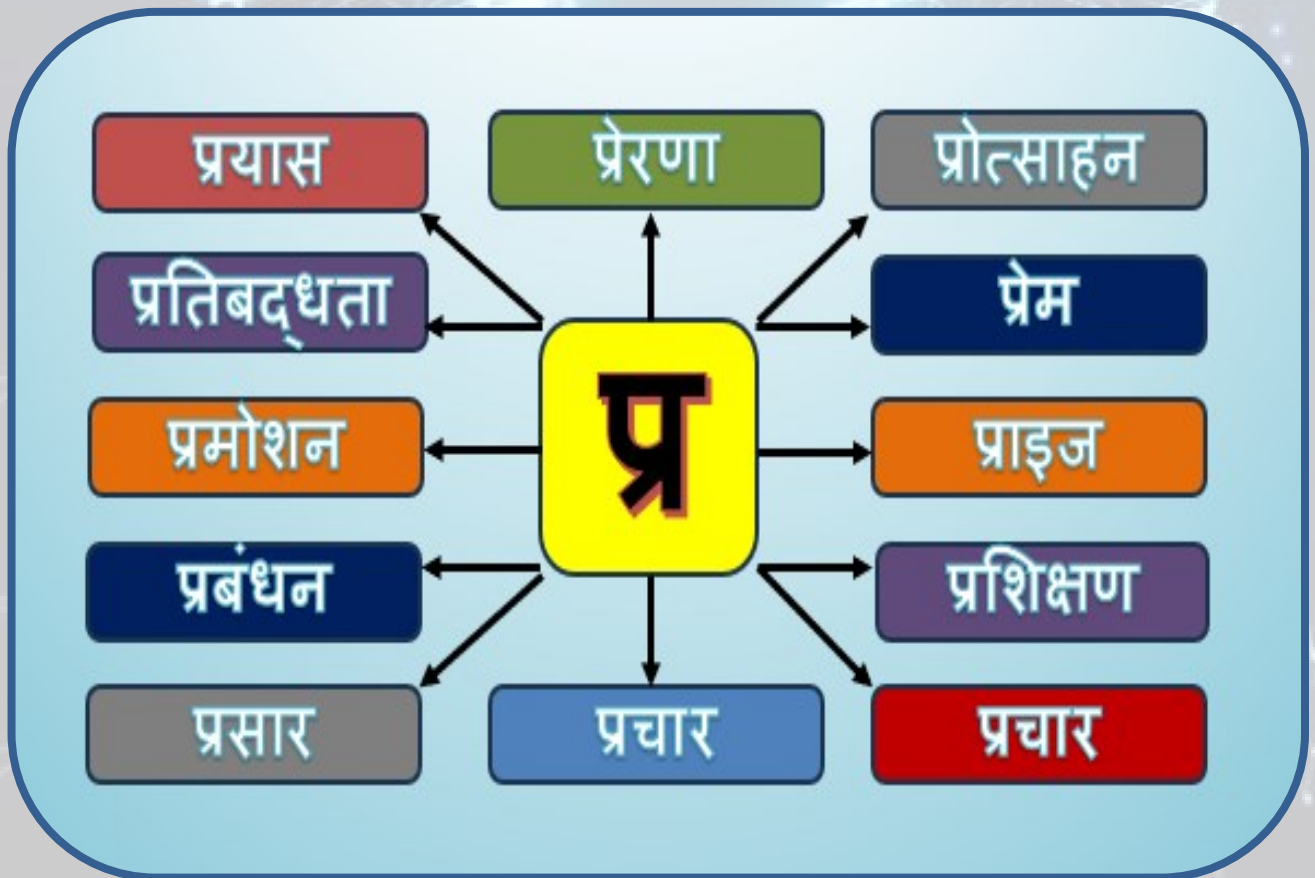
धारा से अलग मानते हैं। वे इसे अनावश्यक कार्य की श्रेणी में गणना करते हैं। वे उसे उपेक्षित एवं हीन भावना से देखते हैं। कहीं-कहीं राजभाषा से जुड़े कार्मिकों को उनके मूल कार्य से हटाकर अन्य कार्य में लगा दिया जाता है।

राजभाषा से जुड़े अधिकारी एवं कर्मचारी उच्च शैक्षणिक एवं व्यावसायिक योग्यता ग्रहण करने के पश्चात ही इस क्षेत्र में पदार्पण करते हैं। उन्हें अनुवादक, राजभाषा अधिकारी/सहायक निदेशक, उप निदेशक, संयुक्त निदेशक एवं निदेशक आदि के पदों पर रहते हुए न केवल राजभाषा संबंधित कार्यों का निर्वाहन करना पड़ता है बल्कि एक हरफनमौला के रूप में विभिन्न कार्य प्रशिक्षक, प्रचारक, समन्वक, संपादक, वक्ता, मंच संचालक, विद्यार्थी, कवि, प्रूफ रीडर, टंकक, कार्यालय राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सचिव एवं नगरों में स्थित नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सचिव आदि के कार्यों को निष्पादित करना होता है जिसके लिए विभिन्न कौशलयुक्त व्यक्ति की आवश्यकता महसूस की जाती है। इसके लिए राजभाषा अधिकारी ही कार्यालयों, विभागों, मंत्रालयों, संगठनों, उपक्रमों, आयोगों में बहुआयामी कार्यों का निष्पादन कर राष्ट्र हित का कार्य करता है। राजभाषा के लक्ष्यों की पूर्ति कार्यालय प्रमुख एवं प्रशासनिक प्रमुख की सहायता के लिए राजभाषा अधिकारी को निरंतर प्रयासरत रहना चाहिए एवं समय-समय पर राजभाषा संबंधित विभिन्न प्रावधानों, नियमों, आदेशों एवं दिशानिर्देशों के अनुरूप संघ सरकार की राजभाषा नीति-नियमों आदि में आने वाले समस्याओं को बैठकों एवं अन्य महत्वपूर्ण अवसरों आदि पर चर्चा आदि के दौरान सशक्त रूप से उठाना चाहिए। पिछले दस सालों में विभिन्न मंत्रालयों, विभागों, कार्यालयों उपक्रमों संस्थानों आदि में राजभाषा के प्रति कार्मिकों एवं उच्च अधिकारियों में राजभाषा के प्रति उदासीनता में काफी कमी आई है। वे राजभाषा संबंधित कार्यों को गंभीरता पूर्वक लेने लगे। इसका एक उल्लेखनीय उदाहरण संसदीय राजभाषा समिति द्वारा समय-समय पर मंत्रालयों, विभागों कार्यालयों, संस्थानों आदि किए गए निरीक्षण एवं बनारस, सुरत एवं पुणे में आयोजित अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन भी है। शीर्षस्थ अधिकारियों को अपने अधीनस्थ अधिकारी द्वारा समय-समय राजभाषा के प्रति किये गए कार्यों की समीक्षा की जानी चाहिए एवं उसके दौरान पायी गई कमियों को दूर करने के लिए उपयुक्त एवं प्रभावकारी कदम उठाने चाहिए।

सरकारी कामकाज में सहज, सरल एवं बोधगम्य हिंदी का प्रयोग करना हमारा केवल मौलिक कर्तव्य ही नहीं है बल्कि नैतिक कर्तव्य भी है जिससे कि आम जनमानस सरकार के कार्यों को एवं नीतियों की सही से समझ सके। चीन, अमेरिका, फ्रांस, रूस जैसे विकसित देश अपना सरकारी एवं व्यावसायिक कार्य अपनी भाषा में करने के कारण ही अग्रणी भूमिका निभाते हैं। हमें अपने देश को विश्व फलक पर देखने के लिए शीर्षस्थ से अधीनस्थ तक अपनी सोच में बदलाव लाने की आवश्यकता है। यदि शीर्षस्थ अधिकारी अपने कर्तव्यों को जिम्मेदारी से निर्वाहन करता है तो उसका प्रभाव निश्चित रूप से उसके अधीनस्थ अधिकारी एवं कर्मचारी पर

उसका प्रभाव अवश्य पड़ता है। इसी प्रकार से यदि शीर्षस्थ अधिकारी अपना कार्य अपने देश की राजभाषा में करे तो उसके अधीनस्थ अधिकारी एवं कर्मचारी पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

राजभाषा के प्रति एक अच्छे वातावरण का निर्माण करना, कार्यालय प्रमुख द्वारा राजभाषा नियम 12 की समूचित रूप से अनुपालना सुनिश्चित करना है। जिस दिन से शीर्षस्थ से अधीनस्थ और अधीनस्थ से शीर्षस्थ के अंदर राष्ट्र हित की भावना जागृत होगी तो मान लीजिएगा कि देश ने विकास की गति पकड़ ली है। यह गति अब रुकने वाली नहीं है। प्रत्येक शीर्षस्थ एवं अधीनस्थ द्वारा राजभाषा में काम करना देश हित एवं लोकहित में काम करना है। एक कुशल एवं सफल प्रशासक वही है जो लोक कल्याण के लिए सरकार की नीतियों को अमल में लाता है।





मानवेन्द्र झा

(सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी)

माँ

माँ महज एक शब्द नहीं
स्नेह-सिक्त ध्वनि है,
वात्सल्य का प्रतीक
ममता की प्रतिमूर्ति
और शिशु की
नैसर्गिक जननी है।
वह तो इस वसुधा का
चिर-हरित धरा का
त्याग और स्नेह का
अप्रतिम साया है,
उसी की संरचना
उसी के पोषण और
उसी के संस्कारों को
हम सबों ने
सहज ही पाया है ।

माँ तो
हर किसी की
माँ होती है
चाहे वह मूर्त रूप हो
या सूक्ष्म जीव स्वरूप हो
हर माँ ही
प्रेम-दया-वात्सल्य से



सुरभित होती है,
वह उतनी ही
करुणा से भरी
और शिशु के प्रति
समर्पित होती है।
फिर क्यों हम
पशुओं के प्रति पाशविकता
और अपनों के प्रति मानवता
अक्सर ही दिखाते हैं,
सहोदर हैं तो अच्छे
किंतु
परोदर को खा जाते हैं।

माँ की ममता तो
हर माँ में होती है,
वो मनुज हो या दनुज
बच्चे बिछड़ने पर
हर माँ रोती है।
इस मातृ-स्नेह पर
कभी किसी माँ को
न अन्यथा समझो,
अगर सच्चे मानव हो
तो हर माँ में अपनी माँ
और उसमे एक
माँ की व्यथा समझो।



समीर आसिफ
(वरिष्ठ लेखापरीक्षक)

ऊँचा नहीं गगन कोई

ऊँचा नहीं गगन कोई, तू एक बार सिर उठा।
इस बार तेरी बारी है, तू पंक में कमल उगा।।

तू रुक नहीं, तू थक नहीं, तू अनवरत कदम बढ़ा।
गिरेगा कोटि बार तू, हर एक बार उठ जरा।।

वो ठोकरे भी आए तो, मुह तोड़ तू जवाब दे।
परछाई जब तक साथ है, कदम-कदम कदम बढ़ा।।

छाले तेरे पांव के, कुछ धूप के कुछ छाओं के।
तू अश्रु को मरहम बना, कर एक अम्बर और धरा।।

आदि है तू अंत भी, अपने ही भविष्य का।
इन सूने, खाली हाथों में, तकदीर अपनी लिख ज़रा।।

दर्ज कर तू नाम अपना, पन्नों में इतिहास के।
कलम उठा तू स्याह उठा, तू गाथा अपनी लिख ज़रा।।

कर्म तेरा धर्म है, श्रम ही तेरी आस्था।
बाहें फैलाये मंजिल भी देखे तेरा ही रास्ता।।

तू ही है शिष्य, तू ही गुरु, तू ही तेरा परमात्मा।
सूर्य तेरा, चंद्र भी, तू तारे अपने चुन जरा।।



हेमलता शर्मा
(लेखापरीक्षक)

द्रौपदी (कृष्ण की सबला)

पूछ बैठी जो भरी सभा में, क्यों यह इतना रोष हुआ ।
क्यों लायी गयी केश पकड़ कर, क्या यहाँ मेरा दोष हुआ ॥

दुःशासन केश पकड़ कर मेरे, यूँ भरी सभा में लाया है ।
क्या नही जानता वह अनभिज्ञ, कि काल उसका आया है ॥

दुर्योधन राजा बनकर भी, क्यों करता ऐसा दुर्व्यवहार ।
जो नीतिप्रिय भी हो ना सका, सभा में कैसा यह आचार ॥

हे पितामह कुछ तो बोलो, क्यों यहाँ पर मौन धराए हो ।
मैं कोई राज संपत्ति नहीं, जो द्यूतक्रीड़ा में मुझे लगाए हो ॥

हे दादा तुम तो नीति प्रिय हो, क्यों नही दंड उठाते हो ।
है राजकुल की मर्यादा जो, क्यों उसको भंग किये जाते हो ॥

हे अर्जुन बोलो, बोलो भीम, है गदा कहाँ गांडीव कहाँ ।
तुम पांचो की पांचाली का, इस सभा सद में सम्मान कहाँ ॥

जो ये सोचो मैं अबला हूँ, अबला नहीं मैं इन पांडवों की ।
हैं नेहर में मेरे भाई कृष्ण, मैं हूँ सबला अपने माधव की ॥

जो ज्ञात हुआ मेरे माधव को, एक क्षण न देर लगाएंगे ।
हिरणागति से मेरे वीर कन्हैया, यहाँ दौड़े-दौड़े चले आएंगे ॥

होती है भृकूटी वक्र जहाँ, कोहराम वहां मच जाता है ।
केशव हथियार उठा ले तो, यहाँ काल भी ना बच पाता है ॥

यदि आए भैया इस सभा मध्य, तब कोई न बचने पाएगा ।
जब चक्र सुदर्शन से उनके, यह सब मूली सा कट जाएगा ॥

यह सुन गरजकर दुर्योधन ने, दुःशासन को आज्ञा दे डाली ।
निर्वस्त्र करो और यहाँ लाओ, जंघाओं पर बिठाओ पांचाली ॥

अग्रज की आज्ञा पाकर जब, दुःशासन ने पट खींच करी ।
अधीर हो हाथ जोड़ कर के, पांचाली तब कृष्ण ध्यान धरी ॥

हे मेरे गोपाल कृष्ण, हे मेरे गोविन्द गिरधारी ।
अब कोई नहीं अतिरिक्त तेरे, यह लाज रखो है लाचारी ॥

माधव की महिमा न्यारी है, वे दोड़े-दोड़े आते हैं ।
जब कोई आर्त पुकार करे, निर्बल का बल बन जाते हैं ॥

अबकी द्रौपदी की बारी थी, जो रोककर कृष्ण पुकारी थी ।
जब बंद हो गई राह सभी, तब अंतिम राह मुरारी थी ॥

जब करी दया दयानिधि ने, मोहन जब करुण पुकार सुनी ।
जहाँ देखो साड़ी ही साड़ी, धरती अम्बर तक चीर बुनी ॥

अनवरत खींचता रहा चीर, वह छोर दूसरा पा न सका ।
थक कर हो गया चूर, साड़ी की थाह लगा न सका ॥

मूर्छित होकर गिरा धरा पर, निर्वस्त्र द्रौपदी कर न सका ।
था बहुत अचंभित दुःशासन, शर्मिदा था पर मर न सका ॥

कभी याज्ञसैनी ने नटवर को, साड़ी का टुकड़ा बांधा था ।
बदले में आज मुरारी ने, साड़ी में साड़ी रांधा था ॥

मेरे श्याम भाव के भूखे हैं, भक्तों की श्रद्धा प्यारी है ।
ऋण चुकता करते ब्याज सहित, ऐसे मेरे श्याम मुरारी हैं ॥



रोहित माथुर

(सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी)

किसान की आत्महत्या

- (1) कहीं आसमान से बर्फ के गोले बरसे
कहीं धरती माँ बूँद-बूँद को तरसे
कहीं सूरज की गर्मी देती है धरती माँ के सीने को चीर
और कहीं रुकते ही नहीं है बारिश की बूँदों के तीर
फिर ऐसे में आ जाती है बाढ़ और हर जगह हो जाता है नीर
किसान तो मरता खेतों में और पूँजीपति खाता घर में खीर
तब मैं अंदर ही अंदर रोता हूँ घुट-घुट कर मरता हूँ।
अफसोस है कि मैं एक किसान हूँ इसलिए आत्महत्या करता हूँ।
- (2) जब पत्नी के गहनों, पूर्वजों की जमीन यहाँ तक की बैल भी गिरवी रखे हो।
जब लड़की की शादी की उम्र हो चुकी हो।
और लड़के वाले दहेज की मांग कर रहे हो।
पर पिता की दहेज देने की औकात ना हो।।
लड़की को अपने लड़की होने का अफसोस हो रहा हो।।
तब मैं अंदर ही अंदर रोता हूँ घुट-घुट कर मरता हूँ।
अफसोस है कि मैं एक किसान हूँ इसलिए आत्महत्या करता हूँ।
- (3) जब आलू सस्ता और चिप्स महंगा हो
प्रत्येक किसान सहमा-सहमा हो
जब किसान की फसल बिकती सस्ती हो
वहीं फसल मॉल में उँचे-उँचे दामों पर सजती हो।
जिस क्षण धरती माता बीज को मांग रही हो
उसी क्षण पूँजीपति ब्याज ताक रहा हो।
तब मैं अंदर ही अंदर रोता हूँ घुट-घुट कर मरता हूँ।
अफसोस है कि मैं एक किसान हूँ इसलिए आत्महत्या करता हूँ।

- (4) खा-खा कर पिज्जा/बर्गर विदेशी कंपनियों को दे रहे चढ़ावा
न तो दे रहें किसानों का साथ और न ही स्वदेशी को बढ़ावा।
भारत की आन-बान-शान वो है मेरे देश का किसान
फिर भी पूंजीपति ले रहें आनंद और बेबस है सिर्फ किसान।
खामोश है जनता, सो रहा है भगवान
क्यों हर साल हजारों किसान दे रहे हैं अपनी जान
तब मैं अंदर ही अंदर रोता हूँ घुट-घुट कर मरता हूँ।।
अफसोस है कि मैं एक किसान हूँ इसलिए आत्महत्या करता हूँ।।
- (5) कभी धूप में जलता भुनता हूँ।
कभी ठंड में ठरता काँपता हूँ
अंधेरी रातों में जागता हूँ
मिट्टी में मिट्टी होकर दिन रात भागता हूँ।
ज्यादा नहीं बस दो रोटी माँगता हूँ।।
मगर पकी फसल में आग लगने से टूट जाता हूँ।।
तब मैं अंदर ही अंदर रोता हूँ घुट-घुट कर मरता हूँ।।
अफसोस है कि मैं एक किसान हूँ इसलिए आत्महत्या करता हूँ।।
- (6) हल का बोझ उठाते-उठाते कठिनाईयों के हल में टूट गया।
हे! ईश्वर ये कैसा इन्साफ देखो धरती का भगवान हमसे रुठ गया।।
अपने बच्चों के दुखः को ना जाने क्यूँ भूल गया।
सावन के मौसम में लगा के फाँसी झूल गया।।
तब मैं अंदर ही अंदर रोता हूँ घुट-घुट कर मरता हूँ।।
अफसोस है कि मैं एक किसान हूँ इसलिए आत्महत्या करता हूँ।।



कविता शर्मा

(कनिष्ठ हिंदी अनुवादक)

पुरुष की कामयाबी में स्त्री का महत्व: स्त्री के लिए सार्थकता

“प्रत्येक कामयाब पुरुष के पीछे एक स्त्री का हाथ होता है” यह उक्ति हमारे भारतीय समाज में अत्यंत प्रचलित है जो स्त्री के समर्पण भाव को प्रकट करती है। इस समर्पण भाव की प्रत्येक समय में अपनी अलग-अलग परिभाषा रही है। चाहे पुराने समय की बात हो या आधुनिक विज्ञान एवं तकनीकी के रूप में विकसित हाई-टैक समाज की, इस समर्पण ने केवल अपना आवरण बदला; प्रकृति नहीं। वर्ष-2020 में 24 जनवरी को रिलीज हुई ‘पंगा’ फिल्म ने मुझे एक बार फिर से इस विषय में सोचने पर मजबूर कर दिया जिसमें फिल्म की हिरोइन जया निगम कहती हैं कि:

“जब मैं तुम्हें देखती हूँ तो मुझे खुशी होती है, जब मैं अपने बेटे को देखती हूँ तो भी बहुत खुश होती हूँ पर जब मैं खुद को देखती हूँ तो खुश नहीं हो पाती हूँ क्योंकि मुझे लगता है कि मैं क्या हो सकती थी और क्या बनकर रह गई”।

फिल्म का यह डायलॉग हमारे भारतीय समाज की लगभग हर स्त्री के उस भावनात्मक द्वंद्व को दर्शाता है जिसको वो शादी के बाद महसूस करती है। एक समय पर कबड्डी की प्रसिद्ध खिलाड़ी के रूप में यह महिला बहुत शोहरत प्राप्त कर चुकी थी परंतु फिर उसकी शादी हो जाती है तथा किसी कारण से वह फिर से अपने खेल को जारी नहीं रख पाती। बेशक इस समय भी वह नौकरी कर रही होती है तथा अपने परिवार में बहुत खुश है, सब कुछ ठीक-ठाक

चल रहा होता है मगर रह-रह कर वो कसक, टीस उसे अंदर ही अंदर सताती रहती है कि मैं वो नहीं कर पाई जो मैं कर सकती थी।

जी हाँ, मैं वो नहीं कर पाई जो मैं कर सकती थी। यही वो कसक है जो हर भारतीय स्त्री के मन में कहीं न कहीं रह जाती है। वह करना तो बहुत कुछ चाहती है परंतु अपने परिवार की कीमत पर कतई नहीं। दूसरी तरफ उसके सपने उसे अपनी तरफ खींचते भी रहते हैं और वो अधूरे सपने उसे खालीपन का एहसास भी दिलाते रहते हैं। हमारे सामने अनेक उदाहरण हैं जिनमें स्त्रियों ने अपने परिवार के लिए खुशी-खुशी अपने करिअर को न्यौछावर कर दिया है। यहाँ पर मैं महान क्रिकेटर सचिन तेंदुलकर की पत्नी अंजलि तेंदुलकर का उदाहरण देना चाहूँगी जिन्होंने अपने पति के क्रिकेट करिअर के लिए अपने मेडिकल करिअर को कुर्बान कर दिया। बेशक आज सचिन तेंदुलकर अत्यंत सफल व्यक्ति हैं तथा अंजलि तेंदुलकर अपने जीवन से बहुत खुश हैं परंतु क्या उन्हें अपने करिअर की याद कभी नहीं आती होगी? क्या यह पीड़ा उन्हें कभी नहीं सताती होगी?

यहाँ पर यह प्रश्न उठता है- हर कामयाब स्त्री के पीछे एक पुरुष का हाथ होता है परंतु जब वही स्त्री कामयाब होना चाहती है तो क्या पुरुष उसके साथ उसी समर्पण भाव सहित खड़ा होता है? अगर चाह कर भी कोई पुरुष ऐसा करे तो उसे समाज में तिरस्कार का सामना करना पड़ता है। उसे 'जोरु का गुलाम' जैसे पता नहीं कितने घृणास्पद शब्दों का सामना करना पड़ता है। बाहर समाज के लोगों का तो कहना ही क्या अपने खुद के परिवार के लोगों से भी उसे ताने सुनने पड़ते हैं।

आज जब मैं 30-40 वर्ष की महिलाओं से मिलती हूँ जिनकी शादी 25 वर्ष की आयु तक हो गई थी उनमें से प्रायः अधिकतर इसी पश्चाताप के साथ जी रही होती हैं कि वे अपने जीवन में अधिक कुछ नहीं कर पाई और वो तो बिल्कुल भी नहीं जो वो करना चाहती थी या कर सकती थी। उनका अधिकतर समय घर के कामों तथा बच्चों को संभालने में ही निकल जाता है

या उन्हें कभी अवसर भी प्राप्त होता है तो भी वो अपना 100 प्रतिशत अपने सपने को नहीं दे पाती। बहुत बार उनका यह सपना इस वजह से भी अधूरा रह जाता है कि उन्हें उसे पूरा करने के लिए अपने वर्तमान स्थान को छोड़कर कहीं ओर जाना होता है जो कि वो कभी भी नहीं कर पाती हैं। इसका एक दूसरा पहलू यह भी है कि क्या शादी का अर्थ कुछ निश्चित शर्तों में बंधकर रहना होता है और कब यह बंधन; बंधन न रह जंजीरे बन जाता है पता ही नहीं चलता। बंधन और जंजीरों के मध्य क्या यह अत्यंत सूक्ष्म परंतु महत्वपूर्ण अंतर भी समझ पाना बहुत मुश्किल है। कामयाबी कभी भी एक मंजिल या लक्ष्य नहीं होती बल्कि यह एक सतत् प्रक्रिया होती है और यह भी नहीं कि एक स्तर पर कामयाबी प्राप्त करने के बाद अगले स्तर की कामयाबी भी स्वयं ही आ जाती है। अगले स्तर की कामयाबी को प्राप्त करने के लिए उसी साथ एवं सहयोग की आवश्यकता होती है। प्रायः किन्हीं निश्चित व्यवसायों में कार्यरत महिलाएँ भी तथा अपने करियर को चुनने के लिए बनाए गए मानदण्ड भी इसके अच्छे उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। महिलाओं के लिए केवल कुछ ही व्यवसाय जिनमें अध्यापन, बैंकिंग तथा 9 से 5 तक के कार्यालय ही प्रमुख हैं, उपयुक्त समझे जाते हैं। हमारे सम्मुख अनेक उदाहरण इस प्रकार के भी आते हैं जिनमें कार्यरत महिलाओं को उनकी पदोन्नति होने पर अन्य स्थान पर जाने से भी रोक दिया जाता है वो भी सिर्फ इसलिए कि पीछे से उनके परिवार को कौन संभालेगा? उनकी सास को दवाई कौन देगा तथा उसके बच्चे के स्कूल का क्या होगा? क्या इन सब की जिम्मेदारी केवल स्त्री की होती है? इन जिम्मेदारियों को पूरा करने के लिए उनकी अपनी पदोन्नति को स्वीकार न करना या अपने पसंद के व्यवसाय में न जाना कितना सार्थक है? क्या महिलाओं का नौकरी करना केवल उनकी आर्थिक जरूरतों को पूरा करने के लिए है और यदि केवल आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति ही इसका कारण है तो इन सब के पीछे उनका आत्मसम्मान, उनके सपने क्या महत्व रखते हैं?

महिलाओं की संख्या देश की कुल जनसंख्या का लगभग 48% है। उनको विभिन्न व्यवसायों में अवसर प्रदान करना न केवल उनके स्वयं के लिए बल्कि देश के विकास के लिए भी अनिवार्य है। 2017 में हुए एक अध्ययन के अनुसार भारत अपने सकल घरेलू उत्पाद को 16% से बढ़ाकर 60% कर सकता है, यदि अर्थव्यवस्था में महिलाओं को पुरुषों के बराबर अवसर प्रदान किए जाएं। यूँ तो 2011 की जनगणना के अनुसार महिला साक्षरता दर 65.46% है जो कि पुरुष साक्षरता दर 82.41% तथा कुल साक्षरता दर 74.04% से काफी कम है। उच्च शिक्षा तथा व्यावसायिक शिक्षा के क्षेत्र में यह अभी भी बहुत कम है। केवल 14.72% महिलाएँ ही व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त कर पाती हैं। व्यस्क महिला साक्षरता दर तो और भी कम-केवल 51% है। यूँ तो सरकार ने महिला उत्थान के क्षेत्र में अनेक योजनाएँ जैसे बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ, महिला साक्षरता अभियान, सामाजिक सुरक्षा प्राथमिक, माध्यमिक तथा उच्च शिक्षा के क्षेत्र में बालिकाओं का नामांकन, लिंग समानता कार्यक्रम, गर्ल स्टार्ट परियोजना इत्यादि शुरू की हैं इसके बावजूद शिक्षा के अभाव में महिलाएँ अपनी सर्वोच्च क्षमताओं के उपयोग से भी वंचित रहती हैं।

यूँ तो यह प्रश्न बहुत ही द्वंद्ववात्मक है कि महिलाएँ स्वयं या फिर समाज किस तरह से उन सीमाओं को निर्धारित करे ताकि वे अपनी सभी जिम्मेदारियों के साथ-साथ अपने स्वयं के लिए भी एक स्थान सुरक्षित रख सकें। अपने जुनून के लिए कार्य कर सकें या वो बन सकें जो वह कभी बनना चाहती थी। इसके लिए वह अपनी किन-किन जिम्मेदारियों का त्याग करे या कितनी कटौती करे जिससे कि जिम्मेदारियों तथा उनके स्वयं के सपनों में संतुलन स्थापित हो सके। आप सभी पाठकगण के घरों में भी शायद किसी अद्वितीय सृजनात्मक क्षमता वाली कोई महिला हो जिसे यदि उस क्षमता को विकसित करने वाले उपयुक्त अवसर व साधन प्रदान किए जाएँ तो वह भी उन्नति तथा आत्मसंतुष्टि के शिखर पर पहुँच सकती है।



गीतांजलि

(कनिष्ठ हिंदी अनुवादक)

अनाश्रित बच्चे

मेरा गीत समर्पित है, यह उन बच्चों के आँसूओं को
 उनके मन में फूट रहे, अनकहे कई जज्बातों को
 वो जो फुटपाथों पर लेटे, बना रजाई आसमान की
 लड़ते हैं जो जंग हमेशा जीवन से, इस सुबह-शाम की
 उन्हें देखकर गीतों में शृंगार नहीं लिख पाती हूँ,
 उनकी पीड़ा मन में लेकर प्यार नहीं लिख पाती हूँ।

उनकी बेबस सी नजरें सपनों में मुझे रूलाती हैं,
 दीदी भूखा हूँ दो दिन से कह कर मुझे जगाती हैं,
 मैं चिहूँक के जब उठ पड़ती हूँ, वहाँ नहीं कोई होता है,
 चारों तरफ एक सन्नाटा और गुप्प अंधेरा होता है,
 फिर आती है याद उन्हीं की जो सड़कों पर लेटे हैं,
 लिपटा कर खुद को अखबारों में, सब मौसम सह लेते हैं,
 जिनकी माँ सच में ये धरती, जिनका मामा चंदा है,
 उन्हें देख कर गीतों में शृंगार नहीं लिख पाती हूँ
 उनकी पीड़ा मन में लेकर प्यार नहीं लिख पाती हूँ।

वे जो धरती पर आए, कहीं सड़क या पुल के नीचे
 दौड़े जाते कुछ पाने की आशा में सबके पीछे
 अधनंगी-सी क्षीण-सी काया, चोटिल और कुपोषित भी
 सर्व-उपेक्षित, सर्व-निरादृत और वे जो हैं शोषित भी
 वे जो तारों में अपनी माता को ढूँढा करते हैं
 चंदा में खाना पकाती बुढ़िया को देखा करते हैं
 बारिश में बस छाँव पेड़ की जिन्हें सहारा देती है
 उन्हें देखकर गीतों में शृंगार नहीं लिख पाती हूँ
 उनकी पीड़ा मन में लेकर प्यार नहीं लिख पाती हूँ।

वो जिनको पढ़ना-लिखना तो दूर, अक्षर तक का ज्ञान नहीं,
 अनुभव जिनकी गणित बनी है, अनुभव ही विज्ञान भी,
 कोई उत्सव, कोई मेला जिनके लिए नहीं होता
 रोटी से बढ़ कोई सपना जिनके लिए नहीं होता
 सहोदर को टांग पीठ पर, जो दर-दर भटका करते हैं
 कुछ खुद और कुछ उसे खिलाकर हँसकर खेला करते हैं
 जिनके लिए सड़क ही शाला, जीवन ही ऐकजाम है
 उन्हें देख कर गीतों में शृंगार नहीं लिख पाती हूँ
 उनकी पीड़ा मन में लेकर प्यार नहीं लिख पाती हूँ।



अनिल कुमार
(वरिष्ठ लेखापरीक्षक)

स्वार्थ के परिणाम

देखो-देखो भैया अब चीन को देखो भैया,
अलमाइटी बनने में अब तो डूब रही है नैया।
भैया-भैया करके ही तो सीमा विस्तार किया रे,
जैविक अस्त्र के चक्कर में चौमुख मंझधार किया रे।
इसी महत्वाकांक्षा में कोरोना विस्तार किया रे,
घर में बैठे बैठे ही दुनिया को बीमार किया रे,
कोरोना ने दुनिया को फुल स्टॉप किया रे,
हम सोच रहे भैया हमने क्या पाप किया रे।
सरकारी बाबू भी अब तो घर में तलें पकौड़ा,
करें न करें अब क्या करें जब घर में पड़े हथौड़ा।
हमने भी तो अपने घर में गुपचुप तैयार किया रे,
अपने ही घर में बने व्यंजन से खूब प्यार किया रे।
तुलसी, गिलोय, अदरक भूल चाय स्वीकार किया रे,
पिज्जा, बर्गर गरम समोसा से था खूब प्यार किया रे।

जंक फूड के चक्कर में हमने इम्युनिटी किया खराब रे,
फिर तुलसी, गिलोय, अदरक को हमने किया याद रे।

हमने भी तो प्रकृति से है खिलवाड़ किया रे,
अब कोरोना ने उसको कुछ सुधार दिया रे।
मानव दुश्मन कोरोना ने प्रकृति से प्यार किया रे,
हमारे पर्यावरण प्रदूषण को भी तो सुधार दिया रे।

आप से बस कहना है सतर्क रहना सीखो,
धोना हाथ लगाना मास्क दो गज दूरी रखो।
इस प्रकृति से भैया तुम भी मनुहार करो रे,
भारतीय संस्कृति से ही अब तुम प्यार करो रे।

चरक संहिता आयुर्वेद को अब स्वीकार रे,
इसी से कोरोना का अन्तिम संस्कार करो रे।
सुबह नमस्ते-शाम नमस्ते हमको यही सिखाये,
जीव-जन्तु पादप से प्यार हमको यही बताये।

देखो-देखो भैया अब चीन को देखे भैया,
उसकी करतूतों से अब दुनिया करे दैया दैया।



रामजी सिंह

(वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी)

क्या कहूँ गरीब हूँ तो रिक्शा चलाता हूँ

डीजल पेट्रोल नहीं, अपने लहू को जलाता हूँ
क्या कहूँ गरीब हूँ, एक रिक्शा चलाता हूँ।।

खाकर सब लोग काम करते, मुझको भूख दौड़ाती है
दिन की थकान मुझको रात भर सुलाती है
भाग दौड़ है जिंदगी, सुबह में भूख से जग जाता हूँ
क्या कहूँ गरीब हूँ, एक रिक्शा चलाता हूँ।।

खुद तो बेघर हूँ, सबको घर पहुंचाता हूँ
सर्दी-बरसात में भी, रोड़ पे सो जाता हूँ
बिगड़ गया नसीब तो, भूखे भी रह जाता हूँ
क्या कहूँ गरीब हूँ, एक रिक्शा चलाता हूँ।।

दिनभर कमाई सिर्फ इतनी हो जाती है
बीबी बच्चें मुझको कुछ रोटी मिल जाती है
कपड़ा मकान तो सपने में सोच पाता हूँ
क्या कहूँ गरीब हूँ, एक रिक्शा चलाता हूँ।।

बड़ा ही विनम्र हो के सवाल एक उठाता हूँ
क्या मेहनत परिश्रम, किसी से कम कर पाता हूँ
तो क्यों मेरा ये हाल है, सभी तो खुशहाल हैं
सोच कर सवाल ये, सिसक के रह जाता हूँ
क्या कहूँ गरीब हूँ, एक रिक्शा चलाता हूँ।।



संजीव कुमार
(आशुलिपिक-II)

शगोल-काइजै

शगोल-काइजै मणिपुर का एक प्राचीनतम खेल है। इस खेल को अंग्रेजी में 'पोलो' कहते हैं। इसका प्रारम्भ मणिपुर में ही हुआ था। अब यह अन्तर्राष्ट्रीय स्तर तक पहुंच गया है। शगोल-काइजै का अर्थ है घोड़े पर बैठ कर काइजै (हॉकी) का खेल खेलना।

शगोल-काइजै का जन्मदाता 'मार्जिङ्' नामक देवता माना जाता है। लोक विश्वास है कि यह खेल देवताओं के बीच खेला जाता था और मनुष्य ने देवताओं से इसे सीखा। लगभग 5000 ई.पू. राजा काइबा के समय यह खेल खेला जाता था। किंतु इसका अत्यधिक विकास और लोकप्रियता राजा कियाम्बा (1467-1508 ई.) तथा राजा खागेम्बा (1597-1652 ई.) के समय में ही हुई। सन् 1863 ई. में कोलकाता में मणिपुर के राजा की ओर से इस खेल का एक प्रदर्शन हुआ। इस प्रदर्शन से अंग्रेज दर्शक इतने प्रभावित हुए कि वे इस खेल को सीखने लगे और उनकी ओर से हर जगह इसका प्रदर्शन किया जाने लगा। बाद में यह एक विश्व-प्रसिद्ध खेल बन गया।

शगोल-काइजै दो दलों के बीच खेला जाता है। दोनों दलों में सात-सात खिलाड़ी होते हैं। यह खेल एक खुले मैदान में खेला जाता है। मैदान की सीमा-रेखा ही इस खेल की गोल-रेखा में होती है। दोनों ओर के खिलाड़ी किसी भी गोल-रेखा में गेंद को ले जा सकते हैं। प्रत्येक खिलाड़ी के हाथ में एक-एक काइजै (हॉकी स्टिक) होती है। काइजै बेंत का बना हुआ होता है और इसका गेंद मारने के सिरे वाला हिस्सा थोड़ा टेढ़ा होता है। गेंद जिसे मणिपुरी भाषा में "काइद्रुम" कहा जाता है, बाँस की सूखी जड़ से बनी होती है और बहुत हल्की होती है। इस खेल के लिए घोड़े की पीठ पर विशेष रूप से तैयार की हुई जीन बाँधी जाती है। खेल के दौरान एक खिलाड़ी दूसरे खिलाड़ी के नजदीक नहीं जाता क्योंकि दूसरे खिलाड़ी के काइजै की मार से चोट लग सकती है। इसलिए काइजै पर काइजै मार कर या अटका कर गेंद छीनने की कोशिश की जाती है। कुशल खिलाड़ी तो काइजै के सहारे गेंद को हवा में उठा कर उसे नीचे गिराए बिना काइजै से ही मार-मार कर गोल-रेखा की ओर ले जाता है।

शगोल-काइजै के लिए प्रत्येक खिलाड़ी को एक अच्छा घुड़सवार होना आवश्यक है।



कविता शर्मा

(कनिष्ठ हिंदी अनुवादक)

कोरोना-काल

कितना भयंकर यह कोरोना काल आया है
 इसने सबको कितना सताया है।
 छोटा हो या बड़ा (सभी देश) सभी जगह इसने तबाही मचाई है।
 न जाने किस-किस की कितनी शामत आई है।
 यूँ तो शायद जिंदगी कभी न थी परिपूर्ण
 पर इस कोरोना ने तो अर्द्ध-विराम सा लगाया है।
 न जाने कैसा यह कोरोना-काल आया है।
 हुआ जब चीन से शुरू तो पूरे विश्व में अपने पैर पसारे हैं।
 अमेरिका, इटली, ब्रिटेन या अन्य कोई भी, सभी संभ्रातों के पसीने छुड़ाए हैं।
 इतना भयंकर भी कभी मंजर होगा न कभी किसी ने सोचा था।
 कभी पैसा भी इतना छोटा (जिनके पास था) साबित होगा, न कभी विचारा था।
 न जाने कैसा यह कोरोना-काल आया है।
 भय और अविश्वास चहुँ ओर इस कदर फैले हैं।
 सारी सकारात्मकता को जैसे उखाड़ ही फेंका है।
 कभी-कभी तो जीवन लगता है अत्यंत ही अंधकारमय

और कभी-कभी इसे अपने ही कर्मों का फल पाया है।

कैसा यह कोरोना काल आया है।

बहुत कुछ परिवर्तन इस समय में पाएँ हैं।

कहीं पर मजदूर 1000-1000 किलोमीटर पैदल चले,

तो कहीं जगदीश अरोड़ा जैसे धनाढ्यों ने पूरे-पूरे

जहाज ही बुक कराएँ हैं।

कई माँओं ने तो सड़क किनारे ही बच्चे जने हैं तो

यहीं कोई बच्चा बिन चप्पल, बिन खाए पिए चला है

कोई सोया शौचालयों में तो कोई रेल की पटरी पर कट के मरा है।

कोई खाने के लिए कुत्तों से लड़ा, किसी ने आत्महत्या की,

किसी ने पीया पानी नाली से, तो कहीं ज्योति जैसे लड़की

ने अपने पिता को साइकिल से गुरुग्राम से बिहार पहुँचाया है।

हाय! कैसा भयंकर यह कोरोना-काल आया है,

अब कोरोना से प्रभावित लोगों की सुनिए दास्ताँ,

न कोई छोटा न बड़ा इससे अछूता रहा

कोई एक दिन की बच्ची, कोई दस वर्षीय मासूम

कोई 28 वर्षीय युवा तो कहीं कोई बुजुर्ग (लगभग) सभी ने इसके दंश को सहा है।

कई तो चले गए छोड़कर और कई भाग्यशाली इससे बच भी पाए हैं।

कितनी कठिनाई इन लोगों को इस समय (इलाज के दौरान) आई होगी,

घर का खाना, अपनों का प्यार सोचकर आँखे तो इनकी भी भर आई होंगी।

कितना भयंकर यह कोरोना-काल आया है।

और अब कैसे न जिक्र करूँ मैं उन योद्धाओं का,

डॉक्टर, नर्स, पुलिस, आर्मी, अध्यापक इनके योगदान का,
 इनकी दिन-रात की मेहनत और सब ने ही तो धैर्य दिया।
 कोई एक महीने बाद घर गया, किसी के बच्चे उनके बिना रहे,
 न जाने किस-किस ने क्या-क्या त्याग किए,
 इनके त्याग ने ही तो जाने कितने घर आबाद किए।
 न जाने कैसा यह कोरोना काल आया है।
 कईयों के असली चेहरे दिखे, कईयों ने राजनीतिक रोटियाँ सेंकी,
 किसी ने अवसर का लाभ उठाया तो यही सोनू सूद, रतन टाटा जैसा व्यक्तित्व पाया।
 जीवन के हर पहलू का इतने कम समय ने दर्शन करवाया है।
 न जाने कैसा यह कोरोना काल आया है।
 और भी न जाने क्या-क्या यह समय सीखा रहा,
 परिवार का क्या महत्व है यह हमें बता रहा,
 आपसी प्रेम से बढ़कर कोई धन नहीं, अपनों सा कोई हम-दम नहीं
 यही तो जीवन की पूँजी है, माता-पिता जैसी न कोई संपत्ति दूजी है।
 न जाने कैसा यह कोरोना काल आया है,
 हाँ, इसी ने तो हमें घर का महत्व बताया है।
 कुछ तो अच्छा भी हुआ, कुछ प्रदूषण कम हुआ
 कही गंगा (नदियों) ने अपनी निर्मलता प्राप्त की,
 कहीं जालंधर से दिखा हिमालय तो कहीं पशु-पक्षियों ने खुलकर साँस ली,
 यहाँ प्रकृति ने समझाया कि सुधरने को अब भी जगह है,
 यह तो सिर्फ एक वायरस है शायद इसके बाद और भी सजा है।
 न जाने कैसा यह कोरोना-काल आया है।



नवीन

(पर्यवेक्षक)

निर्वाण-कथा

प्रिय आत्मन सर्वप्रथम मैं आपके श्री चरणों में प्रणाम करता हूँ, तत्पश्चात मैं आपको अपने एक अनुठे अनुभव के विषय में बताने जा रहा हूँ। अप्रैल-2007 में मेरे एक मित्र ने मुझे एक नव-निर्मित हनुमान मन्दिर में आने के लिए प्रेरित किया जहाँ पर रविवार के दिन बहुत सारे लोग आते थे जोकि वहाँ अपनी समस्याएँ भक्त जी के सामने रखते तथा समाधान पूछते थे एवं 2 घंटे के लिए कीर्तन होता था। मुझे कुछ गाना-बजाना तो आता नहीं था केवल ताली बजा लेता था। जब मुझे वहाँ जाते हुए दो महीने से ज्यादा का समय हो गया तो जून 2007 में एक रविवार को बहुत कम लोग आए थे, अतः उस दिन भक्त जी के पास पर्याप्त समय था, तब उन्होंने मुझसे कहा कि तुम कभी कुछ नहीं पूछते, क्या तुम्हारी कोई समस्या नहीं है, क्या कुछ नहीं माँगना है। तब मैंने कहा अगर मैं कुछ माँगू तो क्या वह मिलेगा, तब उन्होंने कहा माँगों अवश्य मिलेगा, मैंने कहा कि मुझे तो केवल राम चाहिए, क्या दे सकते हो, तब उन्होंने कहा हाँ और मुझे ध्यान पर बैठा दिया। उस दिन से पहले मुझे ध्यान के विषय में कोई ज्ञान ही नहीं था और मैं करीब आधा घंटा ध्यान पर बैठा था और उसी पहले ध्यान के दौरान मुझे आज्ञा-चक्र पर एक अलौकिक प्रकाश का अनुभव हुआ। मैं उस अनुभव के आनंद अतिरेक में डूब ही गया तथा कार्यालय से अवकाश लेकर दिनभर मैं 10-15 बार ध्यान करने लग गया। एक सप्ताह के अंदर ही मुझे अनहद नांद की गूँज सुनाई देने लग गई, पहले दिन जिस प्रकाश का अनुभव हुआ था वैसा ही अनुभव कभी-कभी रात को सोते समय भी होने लग गया। सन्-2008 में कम से कम 05 बार ध्यान के दौरान मृत्यु घटित होने जैसा अनुभव हुआ एवं भय के कारण मैं राम-राम कहता हुआ ध्यान से बाहर आ जाता था। ध्यान के समय एक दिन मुझे मेरे पूर्व जन्म दिखने लगे और मैंने देखा कि मेरे लगातार 07

जन्म मनुष्य के हो चुके हैं फिर अचानक ध्यान टूट गया परंतु मुझे ऐसा आभास हुआ कि मेरे कम से कम 2 जन्म मनुष्य के हो चुके हैं और यह जन्म 21 वां है। ध्यान निरंतर चलता रहा और ध्यान में सारे देवता प्रकट होने लग गए जैसे शिव जी, माता लक्ष्मी, भगवान विष्णु, महात्मा बुद्ध, भगवान महावीर, गुरु नानक देव जी, हनुमान जी।

गुरु पूर्णिमा से पहले भक्त जी ने कहा कि पूर्णिमा के दिन मैं विधिवत शिष्य धारण करूंगा। कोई मुझे गुरु बनाना चाहे तो बना सकता है। मैंने तो काफी पहले ही हनुमान जी को गुरु मान लिया था, 18 वर्षों तक मंगलवार का व्रत किया था। 20-25 वर्षों तक हनुमान चालीसा, अष्टक, बजरंग बाण एवं आरती की थी, सुंदर काण्ड का पाठ सैकड़ों बार किया था। गुरु पूर्णिमा से पहले ध्यान के समय हनुमान जी प्रकट हुए और कहने लगे मैं हूँ ना, तुम्हारा गुरु, और किसी गुरु की आवश्यकता नहीं है, तथा मुझे गुरु मंत्र भी दिया। फिर उस मंत्र के साथ ध्यान करता रहा जिससे काफी लाभ भी हुआ।

सन्-2009 में एक दिन ध्यान के दौरान मैं अपने शरीर से अलग हो गया और ठीक उसी दिन से मैंने पूजा-पाठ, भजन-कीर्तन, ज्योत-बत्ती, व्रत-तीर्थ आदि सब कुछ एक साथ छोड़ दिया जोकि मैं करीब 20-25 वर्षों से कर रहा था। मैंने भक्त जी से अपने ध्यान के अनुभवों के बारे में पूछा तो उन्होंने कहा कि मुझे कुछ नहीं पता, मैंने तो केवल ध्यान पर बिठा दिया था और ज्यादा कुछ नहीं जानता। तब मैंने ध्यान के अनुभवों को जानने के लिए पुस्तकें पढ़नी शुरू कर दी परंतु पुस्तकें पढ़ने के बाद मैं स्वयं को विद्वान एवं ज्ञानी समझने लग गया तथा प्रवचन करना आरंभ कर दिया और परिणामस्वरूप मेरा ध्यान लगना बंद हो गया और निराशा घेरने लगी तब एक दिन विचार आया कि कहीं यह सब किताबी ज्ञान के भ्रम के कारण तो नहीं हुआ कि ध्यान ही नहीं लग रहा तब मैंने सारी पुस्तकें बांध कर रख दी और उस किताबी ज्ञान को भुलने का प्रयास किया, तब कहीं जा कर ध्यान लगना आरंभ हुआ लेकिन कोई विशेष अनुभूति नहीं हुई, इस सब में करीब 06 वर्ष व्यर्थ चले गये। तब मैंने ध्यान करना ही छोड़ दिया और जैसे ही ध्यान बंद किया कुछ समय पश्चात् ही ध्यान लगने जैसी अनुभूति होने लगी, परंतु मैं उसको टालता रहा और ध्यान के लिए बैठा ही नहीं, वह जो ध्यान लगने जैसी अनुभूति होती थी मैं उसको परमात्मा का पत्र द्वारा संदेश मानता था परंतु फिर भी टालता रहा, 10 जून 2017 को प्रातः 7.20 पर ध्यान लगने जैसा आभास हुआ जिसका वेग अत्यंत तीव्र था और ऐसा लगा जैसे आज परमात्मा ने पत्र

नहीं तार भेजा है। मैं कार्यालय जाने के लिए स्नान हेतु उठा था परंतु ध्यान के तीव्र वेग के कारण मैंने ध्यान पर बैठना उचित समझा और पूरे संकल्प के साथ, कि चाहे मेरी गाड़ी छूट जाए, चाहे कार्यालय से छुट्टी लेनी पड़े चाहे नौकरी ही चली जाए अथवा मृत्यु ही घटित हो जाए परंतु मैं ध्यान पर अवश्य बैठूंगा और ठीक प्रातः 7.20 पर मैं सोफे पर बिना स्नान ही ध्यान पर बैठ गया और मात्र कुछ ही मिनटों में मुझे शरीर, श्वास और विचार आदि का कोई बोध नहीं रहा और फिर अचानक नाभि चक्र के पास से चांदी जैसे रंग की एक प्रकाश की किरण ने ऊपर की तरफ उठना आरंभ किया और जैसे ही वह किरण आज्ञा-चक्र के पास आई तो जैसा प्रकाश पहले ध्यान में और कभी-कभी नींद के समय दिखता था वैसे ही प्रकाश के सैकड़ों विस्फोट आज्ञा-चक्र पर हुए यानि वहाँ पर उस किरण का भव्य स्वागत हुआ, लेकिन वह किरण आज्ञा-चक्र को भेदती हुई ऊपर की ओर बढ़ती ही चली गई एवं सहस्रार चक्र पर पहुँच गई और वहाँ एक सफेद प्रकाश का बड़ा-सा गोलाकार हण्डा जल गया और मेरा ध्यान टूट गया जैसे ही मेरी आँख खुली तो मेरे मुँह से जो शब्द निकले वे इस प्रकार हैं, मैं आज धन्य हो गया, आज मेरा जन्म सफल हो गया, उस घटना के बाद एक अलौकिक शांति एवं अलौकिक आनंद का अनुभव होने लगा एवं मेरी सारी शंका, प्रश्न एवं प्यास समाप्त हो गई।

10 जून 2017 को ध्यान से पहले की अनुभूति को मैंने परमात्मा का तार इसलिए कहा क्योंकि मात्र 7.20 से 7.40 (20 मिनट) के ध्यान में ही यह सब हो गया और समाधि घटित हो गई जो प्रायः नामुमकिन सा लगता है क्योंकि ध्यान का वेग अत्यंत तीव्र था। इसलिए यह सब सम्भव हो सका। उस दिन मेरे ऊपर परमात्मा की परम कृपा हुई, उस स्थिति को मैं भली-भाँति बताना चाहता हूँ, वह कुछ ऐसा था जिसको आत्म साक्षात्कार, परमात्मा प्राप्ति कह सकते हैं। ब्रह्म ज्ञान, परम सत्य, परम प्रकाश, परम चेतना, परम ऊर्जा कोई भी एक नाम दे सकते हैं परंतु केवल एक नाम क्योंकि वहाँ ना समय था ना मैं था ना कुछ और केवल उपस्थिति थी, किसकी उपस्थिति ये भी नहीं कहा जा सकता, शायद इसी स्थिति को अद्वैत कहते हैं और इसका हम कोई नाम नहीं भी दे तब भी ये तो है, बिना नाम के भी और इसी को परम सत्ता, परमात्मा कहते हैं। यही वह है जिसका कभी जन्म नहीं होता और मृत्यु भी नहीं होती। इसी परम सत्य का बोध होने के पश्चात् आपको अपने जीवन की दिशा एवं दशा दोनों ही बदली हुई अनुभूत होंगी और मृत्यु आपके लिए समाप्त हो जाएगी क्योंकि आपने जीवन का दर्शन कर

लिया। फिर जो मरेगा वह शरीर होगा और आप शरीर को मरते हुए देख पाएंगे। संपूर्ण ब्रह्मांड में केवल नाद और नूर ही सत्य हैं बाकी सब तो प्रकृति है जो निरंतर बदलती रहती है परंतु नाद और नूर सदा एक से हैं और रहेंगे भी, मनुष्य जन्म मिलता ही इस कार्य के लिए है परंतु ज्यादातर लोग केवल इसी कार्य को नहीं करते बाकी सब करते रहते हैं केवल इसी कार्य के लिए उनके पास समय नहीं हैं और हर प्रकार की कमाई करते हैं परंतु यही कमाई नहीं करते, जिसको गुरु नानक देव जी ने भी खरी कमाई कहा है। केवल ध्यान ही मनुष्य का परम कर्तव्य है। बाकी सब तो गौण है। समाधि घटित होने के उपरांत आपकी प्रज्ञा जाग जाएगी और आपके निर्णय एक दम सटीक होंगे तथा आपके संसार के काम भी कम मेहनत में ज्यादा भली प्रकार होने लगेंगे, बाकी ध्यान के सम्पूर्ण लाभ तो आपको ध्यान करने के बाद ही अनुभूत होंगे।

एक और बात मैं आपको बताना चाहता हूँ, कि इसके बाद मेरा कोई जन्म नहीं होगा इसी जन्म में मैं महानिर्वाण प्राप्त करूंगा। 24 घंटे मुझे अनहद नाद की गूंज सुनाई देती है एवं नूर का दर्शन होता है। ध्यान के मार्ग में सिद्धियाँ भी प्राप्त होती हैं, मुझे भी दो बार सिद्धियाँ प्राप्त करने का अवसर मिला परंतु मेरी रुचि तो परमात्मा प्राप्ति में थी इसलिए मैंने सिद्धियों को नकार दिया था। सिद्धियाँ प्राप्त होने के हमारे शरीर में दो स्थान हैं एक है नाभि-चक्र जहाँ पर मेरा निवास करीब 12 वर्षों तक रहा और दूसरा आज्ञा-चक्र जहाँ पर मैं एक क्षण के लिए भी नहीं रुका यदि रुकता तो त्रिकालदर्शी हो जाता परंतु परमात्मा प्राप्ति से अनिश्चित काल के लिए चूक जाता। अब मेरा निवास सहस्रार चक्र पर है यदि आपको भी परमात्मा से प्रेम हैं अथवा ध्यान में रुचि है तो आप इसको आरंभ कर सकते हैं, यदि आपको मेरी सहायता की आवश्यकता हो तो मैं सहर्ष स्वीकार करूंगा और जब आपको ध्यान घटित होगा और समाधि की अवस्था प्राप्त होगी, तब आपकी भी निर्वाण कथा लिखी जाएगी और आप भी महानिर्वाण को प्राप्त करेंगे। मात्र 20 मिनट के ध्यान में मेरी 21 जन्मों से चली आ रही यात्रा अथवा साधना पूर्ण हो गई।

अंत में अपना कीमती समय प्रदान करने के लिए आप सबका हृदय से धन्यवाद करता हूँ।
आप सब का परम हितैषी।



नवीन

(पर्यवेक्षक)

आनंद की खोज

नमस्कार दोस्तों,

मैं आपको एक अद्भुत रहस्य के बारे में बताना चाहता हूँ। संसार का प्रत्येक प्राणी आनंद खोज रहा है परंतु ज्ञान के अभाव में अथवा भ्रम के कारण वह सारे प्रयासों के बाद भी आनंद को खोजने में सफल नहीं हो पाता है। इसका सबसे बड़ा कारण यह है कि उसको सही मार्ग का ज्ञान नहीं है। वह संसार के पदार्थों अथवा प्रकृति प्रदत्त भौतिक वस्तुओं में आनंद की खोज करता है परंतु ये अटल सत्य है कि भौतिक वस्तुएं सुख तो दे सकती हैं परंतु आनंद नहीं और सुख के पीछे दुख खड़ा रहता है, जरा सी देर के लिए सुख का अनुभव होता है और तुरंत दुख प्रकट होने लग जाता है और हम इसी सुख-दुख के चक्कर में अपना जन्म व्यर्थ गवां देते हैं। पशु-पक्षियों आदि में तो प्रज्ञा का अभाव है परंतु मनुष्य में प्रज्ञा है जिसके कारण मनुष्य ही एक ऐसा प्राणी है जो आनंद की खोज कर सकता है। यदि हम भौतिक सुख का त्याग करके परमात्मा की खोज करें जोकि ध्यान के माध्यम से ही हो सकती है। समस्त संसार में केवल आत्मा ही ऐसा तत्व है जो सत-चित-आनंद स्वरूप है। सत यानि सनातन, चित यानि चेतना और आनंद तो आनंद है ही, हम आत्मा के सच्चिदानन्द स्वरूप को जान कर ही आनंद की खोज कर सकते हैं। यदि हम किसी योग्य गुरु की सहायता पा सके अथवा स्वयं ही प्रयास करके ध्यान आरंभ कर दें तो निश्चित ही हम आनंद ही नहीं परमानंद को भी प्राप्त कर सकते हैं एवं मनुष्य जन्म का हेतु पूर्ण हो सकता है। आनंद का स्रोत हमारे ही अंदर है, यदि हम बाहर की वस्तुओं से अपना ध्यान हटाकर अपने ही अंदर परमात्मा को खोजें तो हम अवश्य ही उसकी प्राप्त कर लेंगे। यह सब मैं अपने अनुभव के आधार पर कह रहा हूँ क्योंकि मैं आत्म साक्षात्कार कर चुका हूँ।



मोहन चन्द्र
(सहायक पर्यवेक्षक)

कोई रोड़ पर ना और कोई रोए ना

यह एक ऐसा समय चल रहा है जहाँ पर उच्च या सामान्य वर्ग तो अपनी जिंदगी को चला रहा है लेकिन निम्न आय-वर्ग का व्यक्ति अपनी जिंदगी को पटरी पर आने की आस-लगाए, टकटकी-लगाए अपने अगल-बगल झांक रहा है। वहीं बड़े-बड़े आशियाना दिखाने वाले मंगल ग्रह पर भी आशियाना दिलवाने वाले अब अपने वहाँ पर किसी ग्राहक के आने पर भी अमंगल महसूस करने लगे हैं। प्रकृति अपना रंग दिखा रही है और इंसान भी अपने जिंदगी को अपने-अपने ढंग से जीने की कोशिश कर रहा है। हम यह खबर तो खूब सुनते हैं कि सरकार गरीबों की मदद कर रही है लेकिन ज्यादातर फोटो खींचने तक रह जाती है। न जाने कितने बेसहारा लोगों को थाली लेकर दरबदर खाने के लिए भागते हुए देखा गया लेकिन हताश होकर वह भी बेचारे रंगीन शहरों की जिंदगी छोड़ कर अपने छोटे-छोटे गांव में जहाँ टिमटिमाते हुए जूगनू को छोड़ कर रंगीन दुनिया में आ गए थे, वह वापस उन शहरों को छोड़कर अपने गांव की टिमटिमाती हुई रोशनी में आशियाना बनाने की तैयारी करने लग गए हैं जहाँ से जाते हुए उन्होंने कभी सपने में भी नहीं सोचा होगा कि यहाँ हमें लौट कर आना होगा।

मैं उत्तराखंड का रहने वाला हूँ, उत्तराखंड पर्वतीय क्षेत्र लगभग-लगभग पलायन हो चुका है कुछ ही लोग वहाँ पर हैं जोकि कुछ मजबूरी के कारण या कुछ अपने वहाँ के लगाव के कारण रुके हुए हैं कुछ तो अपना रिटायरमेंट होने के बाद अपने आशियाने को वहाँ बना चुके हैं लेकिन इसमें जो लोग वहाँ की भाषा, वेशभूषा, खानपान भूल चुके थे अब वहाँ पर दोबारा से जाकर अपने पुराने घरों के किनारे टूटी-फूटी दीवारों को अपना आशियाना समझने लगे हैं और अपना जीवनयापन करने के लिए वहीं पर कुछ काम तलाशने लगे हैं। हालांकि समय के साथ फिर मन परिवर्तन होगा दिल फिर कहीं और डोलने लगेगा, चलो खैर यह तो अलग बात है।

उत्तराखंड से दिल्ली आने के लिए पूरे राजमार्गों पर नए-नए होटल, नए-नए ढाबें, नए-नए मॉल, नए डिजाइन के साथ बड़ी तेजी के साथ खुल रहे थे, छोटे-छोटे शहरों के बच्चे होटल मैनेजमेंट का कोर्स कर इन होटलों में इंटरनेशिप में लगे हुए हैं। यहाँ से वे बड़े-बड़े शहरों में यहाँ तक की विदेश की उड़ान भरने की सोच रहे हैं। एक ही झटके ने उन्हें गांव के उस सरकारी स्कूल में पहुंचा दिया जहाँ वह देखना भी पसंद नहीं करते थे क्योंकि सभी बच्चे अब नए समय में प्राइवेट स्कूलों से पढ़े हुए थे। सरकारी स्कूल में कोई खास जाना नहीं चाहता था। आज के समय में कोई मां बाप अपने बच्चे को सरकारी स्कूल में नहीं भेजना चाहता है क्योंकि वह अपने आप का स्टेटस दिखाने के लिए प्राइवेट स्कूल में ही डालता है लेकिन आज उन सरकारी स्कूलों को क्वॉरेंटाइन सेंटर बनाकर और सारे प्रवासी लोगों को उन सरकारी स्कूलों में लाकर रखा हुआ है और वह सभी बच्चे सरकारी स्कूल को बदलने के लिए अपनी जी-जान से क्वॉरेंटाइन के दिनों में उसके साफ-सफाई और उसको सुधारने में लगे हुए हैं।

वही गांव में घरेलू जीवनयापन करने वालों ने बागवानी में इस उम्मीद से फूल व सब्जियाँ लगाई थी कि अप्रैल-मई महीने में शादियों के सीजन में खूब पैसा कमाएंगे लेकिन कुदरत को कुछ और ही मंजूर था। खेतों में मौसम ने फूलों, सब्जियों को पानी की भी कमी नहीं होने दी क्योंकि मार्च और अप्रैल के पहले सप्ताह तक वर्षा काफी रही, फूल भी खूब खिले और खिलकर मुरझा गए। अपने आप ही प्रकृति में समा गए। नई पौध अब तैयार हो गई। सब्जियाँ भी खूब लगी लेकिन पेड़ों पर ही पक कर झड़ गई और जो शादी-विवाह जैसे शुभ कार्य होने थे वह सभी इस लॉकडाउन में नहीं हो सके जिससे कि बेचारा बागबान हताश होकर हार कर प्रकृति के आगे कुछ ना कर सके। जिन पटरियों को पार करने का मौका ना पाकर सरकार ने ऊपरी और निचले रोड़ बना दिए थे वहाँ अब रेलवे फाटक हफ्ते में आने वाली मालगाड़ी के लिए ही बंद होते हैं। मई माह में उत्तराखंड के जिम कॉर्बेट नेशनल पार्क और नैनीताल जैसे पर्वतीय क्षेत्रों में रानीखेत अल्मोड़ा घूमने वाले लोगों के कारण 2019 में रामनगर, काठगोदाम, हल्द्वानी आदि जगहों पर ही पर्यटकों को रोक दिया गया था क्योंकि आगे बहुत भीड़ थी, गाड़ियों को वहीं रोक दिया गया और सामान्य यातायात पर ही गाड़ियों को आगे बढ़ाया जाएगा लेकिन 2020 में वहाँ ना कोई पर्यटक था ना कोई घूमने वाला था और ना ही कोई जाम, सड़क सुनसान।

दिल्ली-नैनीताल पर्यटन मार्ग होने के कारण पूरे राजमार्ग पर छोटे-बड़े फल विक्रेता, ढाबे सभी नई-नई रंगीन रोशनी से पर्यटकों को आकर्षित करते थे। फल विक्रेता भी अपनी फलों की दुकानों को हाईवे के किनारे सजा कर रखते थे जिससे कि पर्यटक उनके खाने-पीने के सामान को ले सकें और अपने-अपने रिश्तेदारों, दोस्तों इत्यादि के लिए लोग यहाँ से खूब फल इत्यादि लेकर

जाते थे जिसके कारण पूरे राजमार्ग पर जाम की स्थिति पैदा हो जाती थी क्योंकि शहरों से जाने वाला आदमी इन राजमार्गों पर इन फलों को यह देखकर खुशी-खुशी लेकर जाता था कि यह बगीचों के ताजा फल हैं लेकिन समय की करवट के साथ राजमार्गों पर होटल ढाबे सब सुने से पड़े हुए थे और जो बच्चों के मनोरंजन के पार्क बने हुए थे उनमें आज वहाँ उन होटल के कर्मचारियों के बच्चे वहाँ झूल रहे थे। ढाबों पर इक्का-दूक्का आदमी अपने ढाबे की चौकीदारी करता हुआ दिखाई दे रहा था क्योंकि जहाँ पर एक मिनट की फुर्सत भी आदमी को नहीं होती थी। वहीं सब खाली-खाली से दिखाई दे रहे थे। फल विक्रेता अपने दुकान में रखे हुए आमों को खुद ही बैठे-बैठे चूस रहे थे। जिन पार्कों में बड़े-बड़े वीआईपी और बड़ी-बड़ी गाड़ियों में आए हुए बच्चे ही झूलते थे, आज वहाँ पर गरीबों के बच्चे नंगे पैर दौड़ रहे थे और झूला झूल रहे थे।

दिल्ली जैसे शहर में रात के 12:00 से 1:00 बजे तक पार्कों में मस्त घूमने वाले और आपस में बातें करते करते खाना बनाना भी भूल जाने के कारण ऑनलाइन खाना मंगवा लेते थे लेकिन आज अपनी चौखट के दरवाजे पर ऑनलाइन सामान लेने के लिए भी डरने लगे हैं। सभी लोग आपस में ऐसे रहने लगे जैसे कोई किसी को जानता ही नहीं, कॉलोनी में केवल इंसान आपस में जोर से आवाज भी नहीं लगा रहे हैं लेकिन पक्षियों का शोरगुल अब अपनी पूरी चरम पर सुनाई दे रहा है। अब सभी पेड़ों पर चिड़िया सुबह से शाम तक चहकती रहती है, चिड़ियों की आवाज कभी इस शोरगुल में दब सी गई थी अब हर एक के घर तक पहुंच रही है। सफाई अभियान में लगे हुए कचरे के डिब्बे सड़क किनारे कुरकुरे, चिप्स, बिस्कुट आदि के खाली पन्नी कहीं नहीं दिखाई दे रही हैं। ऐसा लग रहा है जैसे अब लोग बिल्कुल सुधर गए हो। कूड़ा-कचरा घर की पन्नी में ही रख कर और सीधे कूड़ेदान में ही डाल आए हैं। किसी-किसी ने हल्की से आवाज में अपने घरों में म्यूजिक भी लगाया हुआ है लेकिन एक घर से आवाज आ रही थी और वह बड़ी प्यारी थी कि-

“चारों पासे सुख होन किथे भी बिना दुख होना,

एवं जयै खुशियां ले आई बाबा नानका मिसी रोटी साबुनू खवाई बाबा नानका”

मैंने कभी इसको सुनकर सोचा कि बाबा नानका कभी कोई रोए ना।



राम प्रकाश चौधरी
(वरिष्ठ लेखापरीक्षक)

देखो सरस्वती पूजा आई

आयी है देखो आयी है,
ये सरस्वती पूजा आयी है।
आओ हम ये पर्व मनाएँ
चरणों में उनके शीश नवाएँ
उनके दर पर नाचें-गाएं।
सरस्वती माता का गुणज्ञान हम गाएं।
सभी छात्र हैं उनके प्रिय,
सभी छात्रों के भी ये प्रिय।

रूप तो देखो उनकी प्यारी,
बच्चों को विद्या देने वाली,
भोली-भाली चेहरे वाली,
ये माता हमें लुभाने वाली,
ये माता हमें सबसे प्यारी।

श्वेत रंग को धरने वाली,
श्वेत कमल पर रहने वाली,
राजहंस वाहन रखने वाली,
श्वेत वस्त्र को धरने वाली।

चार भुजा है रखने वाली,
दो हाथ वीणा धरने वाली,
एक में विद्या धरने वाली,
एक से विद्या देने वाली।

ये माता है भोली-भाली
सुंदर-सुंदर मुस्काने वाली
हम सबको लगती हैं प्यारी,
हम सब पर करुणा बरसाने वाली।
आओ हम उनका पर्व मनाएँ,
फूल-मालाओं से उनको नहलाएँ।
रंगों से घर को चमकाएँ।
माता का मंदिर बनवाएँ,
रात-रात भर जाग-जाग कर
उस मंदिर को हम सजाएँ।

सुनने को हमें आया है कि
जो उनके चरणों में शीश नवाए
उनको खाली नहीं वापस लौटाए।
आओ हम भी शीश नवाएँ
आओ हम माता को मनाए
करें सब मिल कीर्तन-भजन गाएं।
फूल-फल माता को चढ़ाएँ,
संध्या-काल हम आरती गाएं।

दे-दे माता तू हमें दे-दे,
हम बच्चों को विद्या दे-दे।
ज्ञान तू दे-दे विद्या दे-दे,
हम बालक तेरे दर पर आएँ,
नाचे-गाएं और धूम मचाएँ।

तुमसे, हम भी मांगे विद्या
कष्टों को दूर तू करती माता
दान तू करती ज्ञान का माता
हमें भी दे-दे माता विद्या
हम बच्चे तेरे दर पर आएँ।

जय हो माता सरस्वती
जय हो माता शारदे।
तू ही हर कण-कण में है,
तू ही तन और मन में हैं।

तू ही है वीणा-पाणी,
तू ही वाणी (बुद्धि) धारी,
तू ही वेद-पुराण है,
तू ही महापुराण है।

जय हो माता भारती,
जय हो माता शारदा।
जय हो माता सरस्वती,
जय हो माता वागीशा।।



देवेश नारायण गुप्ता
(सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी)

उपवन-सौंदर्य

हरी-भरी डालियों पे चिड़ियाँ चहचहाती हैं।
हवाएँ भी साथ मिलकर मधुर स्वर में गाती हैं।
जिसे सुनकर फिज़ाएँ भी मंद-मंद थिरकती हैं।
और कुसुम अपनी मादकता चहुँ ओर बिखेरती हैं।

डालों पर कभी कर्कश काँव-काँव, कभी मीठी कुहूँ-कुहूँ
पुष्पों को रिझाती तितलियाँ, पपीहा बोले पीहू-पीहू

प्रकृति की इस गोद में, हुई परमानंद की अनुभूति
विभिन्न कलरव-राग की, अभूतपूर्व अनुपम श्रुति
मिला है हमें ये उपहार, सौन्दर्यपूर्ण और निराला
धन्यवाद उस परमेश्वर को जिनकी ये सर्वोत्तम कृति

मदहोश हो गई है पिहंगें, तू भी यह मदमस्ती ले ले।
और प्रकृति के प्रेम-सागर में विचरने को, तू भी इक किशती ले ले।



अनिता कुमारी
(लेखापरीक्षक)

डर

हँसने पर बेवकूफ समझे जाने का डर है,
 रोने पर जज्बाती हो जाने का डर है,
 लोगों से मिलने पर नाते जुड़ जाने का डर है
 अपनी भावनाएँ प्रकट करने में
 मन की सच्ची बात खुल जाने का डर है,
 अपने विचार, अपने सपने लोगों को कहने में,
 उसके छिन जाने का डर है,
 किसी को प्रेम करने के बदले में,
 प्रेम न पाने का डर है।
 कोशिशों में असफलता का डर है,
 आशाएँ बिखरने में निराशा मिल जाने का डर है,
 डर-डर के जीने में कायर
 कहे जाने का डर है
 पर दुनिया की यही रीत है
 डर के आगे ही जीत है।



राम प्रकाश चौधरी
(वरिष्ठ लेखापरीक्षक)

एल.टी.सी. और पूर्वोत्तर की यात्रा

मैं पिछले 10 वर्षों से पूर्वोत्तर की यात्रा करना चाहता था परंतु 6 वर्ष पहले रेल दुर्घटना में मुझे एक पाँव गवाना पड़ा। अब अपाहिज होने के कारण उतने दूर की यात्रा मेरे लिए मुश्किल हो गयी। लेकिन मेरे छोटे मामा जी (श्री रामभरोस चौधरी) जोकि केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल में इंस्पेक्टर हैं। उन्होंने मेरा हौसला बढ़ाते हुए कहा 'राम प्रकाश तुम हवाई यात्रा द्वारा पूर्वोत्तर की यात्रा कर सकते हो'। मैं वरिष्ठ लेखापरीक्षक ₹4200 ग्रेड पे में कार्यरत हूँ। मुझे कार्यालय से यात्रा रियायती भत्ता (एल.टी.सी.) लेना था। मैं ग्रेड पे के अनुसार रेल द्वारा द्वितीय श्रेणी वातानुकूलित का हकदार था। लेकिन मामा जी ने मुझे बताया कि तुम एसएस का पेपर देते हो लेकिन एलटीसी रूल भी नहीं जानते। उन्होंने मुझे एक कार्यालय जापन (डीओपीटी) का पत्र संख्या 31011/3/2018-स्था(क-IV) दिनांक: 20 जून 2019 दिया जिसके अनुसार मैं भी पूर्वोत्तर क्षेत्र (आसाम, मेघालय, त्रिपुरा, अरुणाचल प्रदेश, आदि) की यात्रा प्राईवेट हवाई जहाज से भी कर सकता था।

मैंने उस पत्र को कई बार पढ़ा फिर भी ठीक से समझ में नहीं आया तो अपने सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी से कुछ जानकारी प्राप्त की लेकिन उन्होंने बताया कि उस पत्र के अनुसार मुझे पहले दिल्ली से कलकत्ता ट्रेन से जाना होगा फिर वहाँ से आसाम हवाई जहाज से जाया जा सकता है। लेकिन मैं पुनः प्रशासन-II में पूछने गया तो वहाँ के सहायक लेखा परीक्षक अधिकारी ने आश्वासन दिया कि आप आवेदन करो फिर देखेंगे। फिर मैंने डरते हुए आवेदन किया लेकिन मुझे प्रशासन-II के ही एक लेखापरीक्षक ने कहा कि आपको पूर्वोत्तर की यात्रा रियायता भत्ता पूरा मिलेगा।

तो इस तरह मुझे दिनांक 17-12-2019 से 21-12-2019 तक का पूर्वोत्तर क्षेत्र की यात्रा का शोभाग्य प्राप्त हुआ।

उसी बीच दिनांक 12-12-2019 को भारत सरकार द्वारा सीएए/एनआरसी बिल से संबंधित एक घोषणा जारी की। इस के विरोध में दिल्ली, बिहार, आसाम, बंगाल आदि में दिनांक 15-12-2019 को हिंसा भड़क गई। दिल्ली की जामिया/जेएनयू आदि में बहुत ही भयंकर हिंसा हुई।

इस हिंसा को देखते हुए मेरे पिताजी एवं धर्मपत्नी पूर्वोत्तर की यात्रा के लिए तैयार नहीं हो रहे थे। लेकिन मैंने अपने मन में हिम्मत करते हुए सबसे पहले अपने मामा जी को फोन करके स्थिति की जानकारी ली, फिर दिल्ली के राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ (आरएसएस) के एक कार्यकर्ता द्वारा आसाम के राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ कार्यकर्ता से वहाँ की स्थिति की जानकारी ली। मामा जी ने तो कहा स्थिति सामान्य हो गई है, आप जा सकते हो। लेकिन डिब्रूगढ़ (आसाम) के तिनसुकिया विभाग के कार्यकर्ता ने

मुझे आने से रोका क्योंकि 15-16 दिसम्बर 2019 को तिनसुकिया जिले में सीएए/एनआरसी के विरोध में बहुत ही हिंसा भड़की हुई थी। जगह-जगह पर दुकानें जलाई गई थी यहाँ तक कि डिब्रूगढ़ से तिनसुकिया के बीच के कई रेलवे स्टेशनों को भी जलाया गया था परंतु मैंने अपनी हिम्मत नहीं हारी। पिताजी एवं धर्मपत्नी को झूठ बोला कि मामा जी एवं राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कार्यकर्ता बोल रहे हैं कि स्थिति सामान्य हो गई है, अब आप आ सकते हो। मैंने दिल्ली के राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) के कार्यकर्ता से आसाम के विभाग कार्यकर्ता का पता एवं दो कार्यकर्ताओं का मोबाइल नं. लिया और यात्रा के लिए चल पड़ा। मन में पूरे परिवार की चिंता थी क्योंकि मैं एक दिव्यांग आदमी था मेरे सहारे ही मेरा परिवार जा रहा था। नया शहर था। वहाँ कोई जानकार भी नहीं था। ऊपर से सीएए/एनआरसी की हिंसा।

मैंने दिनांक 17-12-2019 को हवाई जहाज द्वारा दिल्ली से डिब्रूगढ़ (आसाम) की यात्रा प्रारम्भ की। मेरा पूरा परिवार पहली बार ही हवाई जहाज द्वारा यात्रा कर रहा था। इसलिए पूरा परिवार ही बहुत खुश हो रहा था। मेरा बेटा उज्ज्वल जो कि पाँच साल का था। उसकी खुशी देखकर मेरे पिताजी जो 72 वर्षों के हैं उन्हें भी बहुत आनंद आया। दो-तीन दिन पहले वह हाईब्लड प्रेशर से ग्रस्त थे, खुशी से सभी बीमारी भूल गये थे और आनंदित हो रहे थे।

दिनांक 17-12-2019 को दिल्ली से डिब्रूगढ़ की हवाई जहाज द्वारा यात्रा की। एयरपोर्ट पर उतरने के बाद वहाँ के कार्यकर्ता को फोन किया तो उसने कहा मैं नहीं आ सकूँगा क्योंकि सीएए/एनआरसी के विरोध में हमारे यहाँ के रास्ते बंद हैं। अब तो मेरा मन घबराने लगा क्योंकि मेरे लिए बिल्कुल नया शहर था। टैक्सी वाले एयरपोर्ट से डिब्रूगढ़ शहर तक ले जाने के लिए अनाप-सनाप पैसे मांग रहे थे और डर भी था कि क्या पता कहाँ ले जाकर फँसा दे लेकिन कुछ ही देर बाद आसाम के तिनसुकिया जिला के राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के विभाग कार्यालय से अनजान आदमी जो संघ के विभाग प्रचारक थे। उन्होंने मेरा मार्गदर्शन किया, बोला आप तिनसुकिया जिला आ जाओ। वहाँ राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ का विभाग कार्यालय था। वहाँ गया तो संघ कार्यालय में भारी संख्या में सुरक्षा बल तैनात था। संघ के कार्यकर्ता ने मेरी और मेरे परिवार की संघ कार्यालय से एक होटल में व्यवस्था कर दी। वहाँ शाम को 4 बजे बाद धारा-144 लगना था इसलिए उस दिन हम लोग कहीं नहीं जा पाए, होटल में ही रहे।

उस रात पिताजी एवं धर्मपत्नी मुझ पर बहुत गुस्सा करने लगे। मैं भी कुछ देर के लिए दुःखी हो गया। सारी रात मुझे नींद नहीं आई। मैं वहाँ के कार्यकर्ता से सम्पर्क करता रहा। फिर प्रातः 6:30 बजे मैंने अरुणाचल जाने के लिए गाड़ी बुक करवाई। दिनांक 18-12-2019 को हम लोग अरुणाचल प्रदेश गए, जहाँ परशुराम कुण्ड (ब्रह्मपुत्र नदी का उद्गम स्थल) है। कुण्ड के पास परशुराम मंदिर है तथा मंदिर से लगभग 315 सीढ़ियाँ पहाड़ियों के नीचे कुण्ड है। जहाँ यात्रीगण स्नान करते हैं। वहाँ मकर-संक्रान्ति पर मेला भी लगता है। वहाँ एक स्थान पर गर्म जल भी निकलता रहता है।

मैं दिव्यांग हूँ, मेरे लिए वहाँ पहुँचना मुश्किल था। लेकिन मेरा बेटा उज्ज्वल ने कहा पापा आप बजरंगबली का नाम लो धीरे-धीरे पहुँच जाओगे। इतना बोलकर वे माँ के आगे-आगे लगभग 150 सीढ़ियाँ नीचे चला गया। फिर मैं भी हिम्मत करता हुआ उसके पीछे-पीछे चल दिया। कुछ देर बाद मेरे पिताजी भी धीरे-धीरे पहुँच गए। इस तरह हम लोग सभी एक साथ मिलकर पवित्र नदी ब्रह्मपुत्र में स्नान किया। वहाँ का विहंगम दृश्य देखकर हम लोग बहुत प्रसन्न हुए। वहाँ से हम लोग वापस डिब्रूगढ़ (आसाम) के लिए रवाना हुए। रास्ते में फिर सीएए/एनआरसी के विरोध करने वाले का सामना करना पड़ा। मेरे कार

डाईवर ने हम लोगों को जैसे-तैसे चाय के बगानों के बीच से घुमाते हुए लगभग 5 बजे शाम तक डिब्रूगढ़ रेलवे स्टेशन छोड़ दिया। फिर रात्रि 8:30 बजे हम लोग गुवाहाटी (आसाम) के लिए रवाना हुए।

अगले दिन प्रातः 6 बजे गुवाहाटी (आसाम) पहुँचे। वहाँ हमने राष्ट्रीय संघ के कार्यकर्ता विजय जी से सम्पर्क किया तो उन्होंने मेरे लिए होटल तक जाने के लिए गाड़ी की व्यवस्था की एवं होटल में ठहरने की व्यवस्था भी विजय जी ने ही की।

दिनांक 19-12-2019 को हम लोग गुवाहाटी (आसाम) पहुँचे। उसी दिन लगभग 11 बजे गुवाहाटी के प्रसिद्ध मंदिर “कामरूकामाख्या देवी” जोकि बंगाल की शक्ति पीठ है, उनके दर्शन किए। वहाँ की मान्यता है कि शीघ्र ही मनोकामना की पूर्ति होती है। वहाँ की पूजा व्यवस्था एवं दुकानों की सजावट तथा खिचड़ी प्रसाद की व्यवस्था मुझे बहुत अच्छी लगी। मेरे पिताजी भी “माँ कामरूकामाख्या” मंदिर का दर्शन कर अति प्रसन्न हुए।

अगले दिन दिनांक 20-12-2019 को होटल वाले के सहयोग से हमने शिलांग (मेघालय) की यात्रा की। रास्ते की पहाड़ीनुमा सड़क एवं घुमर-घुमर कर बादल आने का दृश्य देखकर हम लोग बहुत ही आनंदित हुए। मेघालय में एक पहाड़ी से गिरते झरने की आवाज सुनकर मेरा बेटे ने पूछा कि पापा ये पानी कहाँ से आता है और कहाँ चला जाता है तो मेरे पापा जी ने बताया कि पहाड़ के ऊपर से आता है और सामने वाले झील में चला जाता है। फिर बोला दादा जी क्या इसमें लोग स्नान नहीं करते हैं? फिर पापा जी ने कहा नहीं-नहीं, यह बहुत गहरा पानी है बच्चे डूब जाते हैं। चलो दुकान में सामान खरीदेंगे। तो मेरा बेटा बोला हाँ दादा जी मैं तो दो कार ही खरीदूँगा। एक अपने लिए और एक अनुज भाई के लिए। दादा जी मम्मी के लिए भी कुछ ले लेंगे। फिर पापा जी ने उज्ज्वल के लिए दो कार (लकड़ी की), दो टोपी, दो पर्स, एक टेबल घड़ी (लकड़ी की) एवं दो शॉल (वूलन की) खरीदी। वहाँ से वापसी में मेघालय के बाजार की तरफ गए तो महालेखाकार कार्यालय देखा। सदर अस्पताल एवं सेना का प्रशिक्षण कार्यालय भी देखा। बाजार में बहुत ही भीड़ देखने को मिली क्योंकि सीएए/एनआरसी के हड़ताल के कारण कई दिनों के बाद कार्यालय एवं बाजार खुला था। पुनः हम लोग गुवाहाटी वापस आ गए।

अगले दिन दिनांक 21-12-2019 को हमने गुवाहाटी की यात्रा के लिए कार बुक की जोकि गुवाहाटी शहर में कला म्यूजियम, वशिष्ठ मंदिर, बालाजी मंदिर, कपड़ा एम्पोरियम एवं ब्रह्मपुत्र नदी में जहाज द्वारा शिव मंदिर दर्शन किया। गुवाहाटी शहर बहुत ही अच्छा लगा। कला म्यूजियम के कर्मचारियों का व्यवहार बहुत ही अच्छा लगा। कपड़ा एम्पोरियम के कर्मचारियों का व्यवहार प्रशंसनीय था। ब्रह्मपुत्र नदी पर जहाज की यात्रा से मेरा उज्ज्वल बहुत ही प्रसन्न हुआ क्योंकि उसने पहली बार ही जहाज देखा था। इतनी बड़ी नदी भी पहली बार ही देखी थी। नदी को आज भी वह समुद्र बोलता है। दादा जी से कहता है दादा जी समुद्र में स्नान करने कब चलेंगे?

इस तरह मेरी पूर्वोत्तर की यात्रा पूर्ण हुई। मैं अपने लेख के माध्यम से सभी अधिकारियों/कर्मचारियों को पूर्वोत्तर भारत की यात्रा की सलाह देना चाहता हूँ।



गीतांजलि

(कनिष्ठ हिंदी अनुवादक)

आज तमाचा मेरे गाल पर

आज तमाचा मेरे गाल पर,
 एक बच्ची ने मारा है।
 जीवित मानव का मुर्दा चेहरा,
 उसने फिर आज उखाड़ा है।
 कई बच्चियां पूछ रही हैं,
 प्रश्न मेरे सम्मुख होकर।
 जीवित हो या मृत पड़ी हो
 तुम अपनी सुध-बुध खोकर?
 मैं भाग्य हीन क्या उत्तर दूँ ?
 रोज तमाचे सहती हूँ।
 बिलख-बिलख कर अंतर्मन में,
 टूट-टूट कर रहती हूँ।
 दिन प्रतिदिन ऐसा लगता,
 अदृश्य हुई जाती हूँ।
 कभी कहीं तो कभी कहीं,
 पैरों से रौंदी जाती हूँ।
 हे मानव ! कर याद !
 सदियों का अपना नाता है
 मेरी रक्षा ही तेरा भविष्य है,
 मेरा नाम मानवता है।



मानवेन्द्र झा

(सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी)

हिंदी भाषा: उद्भव और विकास

हिंदी भाषा का तात्पर्य देवनागरी लिपि में लिखी जाने वाली उस खड़ी बोली है जिसमें तत्सम, तद्भव, देशज, विदेशज और सदृश्य शब्दों का प्रयोग किया जाता है। हिंदी के वे शब्द जो संस्कृत भाषा से मूल रूप में लिए गए हैं, तत्सम कहलाते हैं। जैसे- बालक, शिक्षक, छात्र, शिष्य, धर्म, पुस्तक, पुष्प, भूमि, काल, शिक्षा, उपदेश, आश्चर्य, शक्ति आदि। किंतु हिंदी के वे शब्द जो संस्कृत से रूपांतरित होकर आए हैं, तद्भव कहलाते हैं। जैसे- दधि से दही, क्षेत्र से खेत, कृष्ण से काला, अग्नि से आग, आश्चर्य से अचरज, अमावस्या से अमावस, अन्न से अनाज आदि। वे शब्द जिनके उत्पत्ति मूल का पता नहीं है किंतु प्रचलन में हो, देशज शब्द कहलाते हैं। जैसे- लोटा, कटोरा, डिबिया, खिड़की, खिचड़ी, चिड़िया, जूता, कलाई आदि। विदेशी भाषाओं से प्राप्त शब्द विदेशज शब्द कहलाते हैं। जैसे- अरबी भाषा से अखबार, अमीर, आज़ाद, आदमी, आम आदि। यूनानी भाषा से- एटलस, एकेडमी, टेलीग्राफ, बाइबिल, टेलिफोन आदि। अंग्रेजी भाषा से- रेडियो, पेंसिल, कार, ट्रक, स्टेशन आदि। पुर्तगाली भाषा से- गमला, आलू, चाबी, आलपीन आदि। किंतु सदृश्य वैसे शब्द हैं जो विदेशी शब्दों से रूपांतरित होकर हिंदी में आए हैं। जैसे- ऑर्डरली से अर्दली, ऑफिसर से अफसर, लैन्टर्न से लालटेन आदि। इस तरह हिंदी भाषा एक अथाह क्षीर-सागर सदृश्य है जिसमें किसी भी प्रकार के जलस्रोत के विलय होने से क्षीर के वर्ण और सादृश्यता पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा है। इसका शब्द भंडार अत्यंत वृहद है। अगर हिंदी भाषा के उपर्युक्त सभी प्रकारों के शब्दों की गिनती की जाए तो इसके शब्द भंडार में डेढ़ लाख से भी ज्यादा शब्द आ जाते हैं। विश्व की शायद ही किसी भाषा में इतने शब्द हैं।

अगर अन्य प्रचलित भाषाओं से तुलना की जाए तो अन्य भाषाएँ हिंदी के सामने बौनी प्रतीत होती हैं। दृष्टांत के तौर पर अंग्रेजी भाषा में सूर्य के लिए एकमात्र शब्द है- sun जबकि हिंदी में उगते सूर्य को अरुण, फिर प्रभाकर, दिवाकर, मध्याह्न के सूर्य को मार्तण्ड, फिर भास्कर, दिनकर, रवि आदि कहते हैं। इसी तरह पृथ्वी के लिए अंग्रेजी में Earth ही शब्द है जबकि हिंदी में इसके लिए भू, भूमि, धरा, वसुधा, वसुंधरा, धारणी, अवनी आदि अनेकों शब्द हैं।

और तो और अंग्रेजी भाषा में शब्द सीमित होने के कारण पर्याप्त स्पष्टता भी नहीं है। हमारे यहाँ हिंदी में चाचा, ताऊ, मामा, मौसा, फूफा, पिसा आदि संबंध बोधक शब्द हैं जबकि अंग्रेजी में इन सभी शब्दों के लिए एक ही शब्द है- Uncle. इसी तरह चाची, मामी, काकी, पीसी, फूफी, ताई के लिए एक ही शब्द- Aunt है।

अंग्रेजी भाषा के मुश्किल से दस हजार अपने शब्द हैं और अन्य भाषाओं से उधारी लिए गए दस हजार अन्य शब्द। कुल मिलाकर बीस हजार से ज्यादा इसके शब्द भंडार नहीं हैं। फिर भी हम हिंदी जैसी समृद्ध भाषा को स्वयं अपने ही देश में उचित स्थान और सम्मान दिलाने में किंचित ही सफल रहे हैं।

असल में हिंदी भाषा के शब्द भंडार समृद्ध होने के कारण इसका उद्भव स्रोत है। हिंदी का उद्भव संस्कृत से हुआ है। इसलिए संस्कृत हिंदी की माँ है। इसके दो-तिहाई शब्द संस्कृत भाषा से ही आए हैं। संस्कृत अति पुरातन भाषा है जिसमें चारों वेद, अठारह पुराण, 108 उपनिषद और अन्य कई महान ग्रंथ जैसे- महाभारत, रामायण, भगवद्गीता आदि की रचना की गई है। कालांतर में मध्यकाल में हिंदी साहित्य के बेशुमार कवियों, लेखकों जैसे तुलसीदास, सूरदास, कबीरदास, रहीम, बिहारी, रसखान, रैदास, भूषण, भारतेन्दु हरिश्चंद्र आदि के द्वारा विभिन्न रचनाओं के माध्यम से हिंदी भाषा का उत्तरोत्तर विकास हुआ। हिंदी भाषा एवं साहित्य का यह उत्कर्ष काल था। इन साहित्यकारों के अलावा कुछ महापुरुषों ने भी हिंदी के विकास में अभूतपूर्व योगदान दिया। इनमें आर्यसमाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द सरस्वती का नाम प्रमुखता से लिया जाता है। उन्होंने पूरे भारत में हिंदी भाषा के प्रयोग और प्रसार के लिए आर्यसमाज संस्था का उपयोग किया। इसके अलावा महात्मा गांधी ने भी हिंदी को राष्ट्र भाषा बनाए जाने का पूरा प्रयास किया। 29 मार्च 1918 को उन्होंने घोषणा की, भारत की राष्ट्रभाषा हिंदी होगी। इसी दिन से उन्होंने हिंदी के प्रति अपना पूर्ण समर्पण व्यक्त किया। उन्होंने एक समारोह में यहाँ तक कह डाला, “दुनिया से कह दो कि गांधी अंग्रेजी भूल गया।” धातव्य है कि महात्मा गांधी की अंग्रेजी कई अंग्रेजों से अच्छी थी और उन्होंने अंग्रेजी में उच्च कोटी की पुस्तकें भी लिखी थी। फिर भी अपने राष्ट्र भाषा के प्रति पूर्ण समर्पण के लिए उन्होंने अंग्रेजी का त्याग कर दिया और फिर आजीवन हिंदी में भाषण और कार्य करते रहे। किंतु आज़ादी के उपरांत क्षेत्रवाद, भाषावाद, ओछी राजनीति और मानसिक दासता किम्बा यूरोपीय संस्कृति के प्रति अनन्य आशक्ति के कारण हिंदी की स्थिति में गिरावट आई और हिंदी राष्ट्रभाषा की जगह अनुवाद की भाषा बनकर रह गई। सारे राजकाज अंग्रेजी भाषा में होते हैं और फिर उसका अनुवाद हिंदी में कर दिया जाता है।

इस कठिनाइयों के बावजूद हिंदी का भविष्य उज्ज्वल है। आज हिंदी विश्व भर में बोली जाने वाली दूसरी सबसे बड़ी भाषा है। यह भाषा विश्व भर में लगभग 125 करोड़ लोगों द्वारा बोली या समझी जाती है। अकेले भारत में 100 करोड़ लोगों द्वारा हिंदी बोली या समझी जाती

है। बाकी के 25 करोड़ लोग कई देशों जैसे- मॉरीसस, सूरीनाम, इन्डोनेशिया, मालदीव, नेपाल, पाकिस्तान, बांग्लादेश, अफगानिस्तान आदि में हिंदी बोलने वाले या समझने वाले हैं। विश्व का हर छठा व्यक्ति हिंदी भाषी है। हिंदी का लगातार विकास हो रहा है, यह हिंदी भाषा की सरलता, सहजता, बोधगम्यता, और अनुकूलता के कारण है। वह दिन दूर नहीं जब हिंदी को तकनीकी क्षेत्रों और वैज्ञानिक अनुसंधान क्षेत्रों में भी कुशलता से उपयोग किया जाने लगेगा। हिंदी भाषा की उपयोगिता और उन्नति को निम्नांकित पद्यांशों में अभिव्यक्त किया गया है-

हिंद देश के हम निवासी
 गर हिंदी है तो हम जिंदा हैं,
 निज भाषा और तान के हम
 बेघर अनाथ परिंदा हैं।
 निज भाषा ही है शक्ति हमारी
 समृद्धि व एकता का द्योतक है,
 मातृभूमि की यह शान हमारी
 शीर्ष सम्मान का बोधक है।
 मातृभाषा जब राष्ट्र भाषा हो
 राष्ट्र का विकास सुनिश्चित है
 तब क्षेत्रवाद और भाषावाद का
 समूल विनाश अकिंचित है।
 राष्ट्र भाषा है अलौकिक शक्ति
 नव संचार संकल्प देती है,
 हिंदी हमारी है आदि शक्ति
 जो संहार अनिष्ट कर लेती है।
 आएँ हम सब मिलकर आज
 बहू भाषा का विकल्प हरे,
 एक देश और एक भाषा हो
 ऐसी एकता का संकल्प करें।
 अगर देश है तो हम हैं
 बिन राष्ट्र भाषा के हम भिखारी हैं
 संघीय ढांचे में रहने वाले
 हम हिंदी-पुत्र बिहारी हैं।





मोन् ज़ांगिड़

(कनिष्ठ हिंदी अनुवादक)

जीवन-चक्र: एक फल की जुबानी

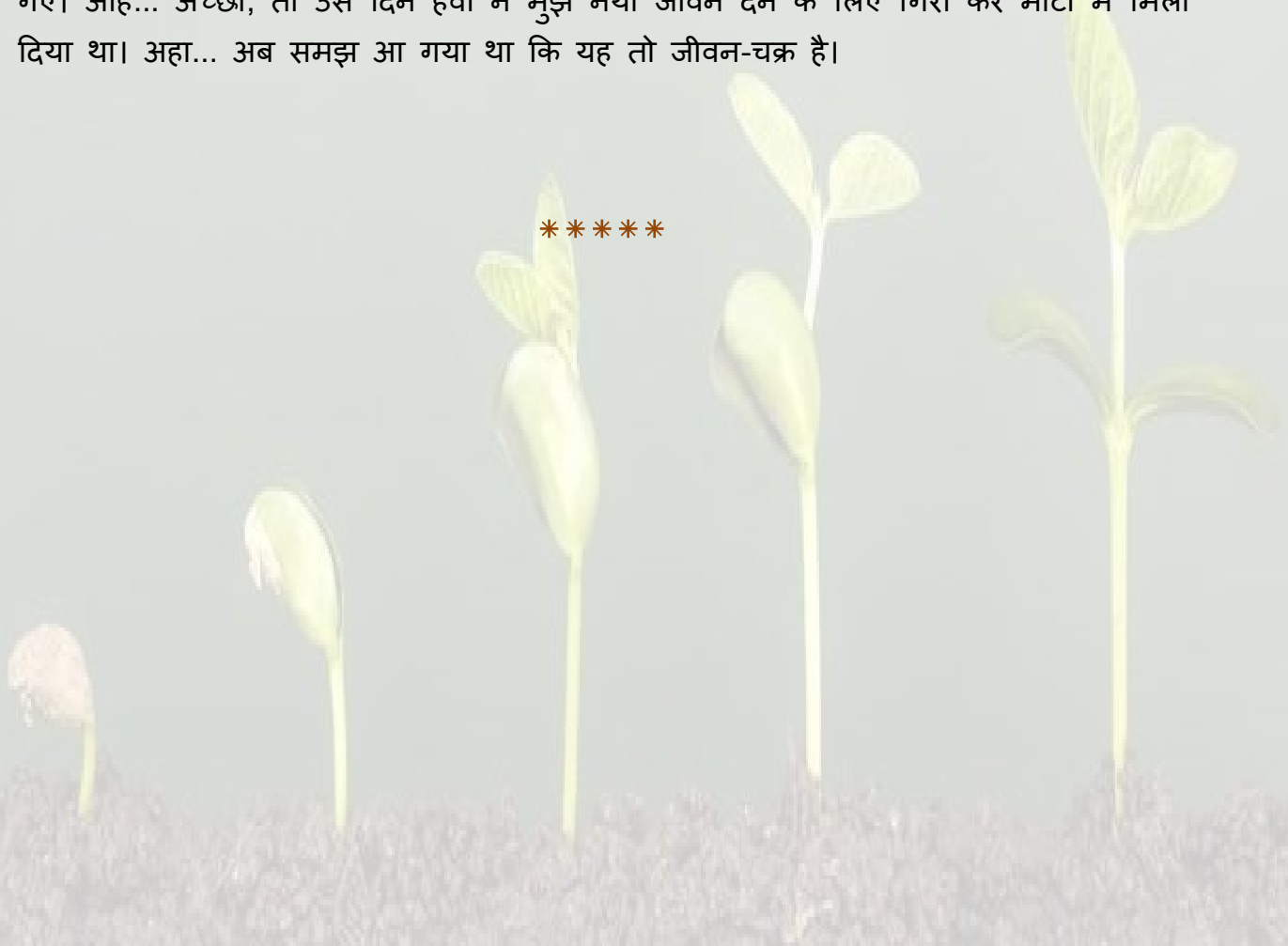
बगीचे की ज़मीन पर मैं उसी तरह पड़ा हुआ था, जैसा मुझे होना था। मेरे पिता पौधे ने सूखते ही मुझे नीचे गिरा दिया। वैसे मुझे यह भलीभांति मालूम था कि वो अकेले ऐसा नहीं कर सकते थे, इस काम में हवा ने उनकी पूरी सहायता की थी। वही हवा जो मुझे युवावस्था में हिला जाती थी। हवा अपने साथ मेरी सुगंध ले जाती और तितलियों के दल को मेरे पास ले आती। तितली ही नहीं, अपितु भौरे और मधुमक्खी भी मेरे आस-पास मंडराते रहते थे। मुझे तो सबसे ही प्यार था। मैं तो चींटी, मक्खी या ततैया कोई भी हो, किसी से दुश्मनी नहीं करता था। मगर बीस-पच्चीस दिन बाद मेरा तन सूखने लगा। मेरी तरफ तितली, भौरे, चींटी सबने आना बंद कर दिया, मगर एक गौरैया आती थी, वो मुझे सूंघती और चली जाती।

एक दिन हवा के झोंके ने मुझे मेरे परिवार से अलग कर दिया। मेरे भाई फूल और पत्ते, मेरे चाचा-चाची समान डाली, सब मुझे एक ही पल में भूल गए। यहाँ तक की हवा ने मुझे कुछ ओर आगे लाकर पटक दिया। मैंने तो ऐसे पल की कल्पना तक नहीं की थी। मैं सुबकने लगा की रात हो गई। उफ, मिट्टी से सना हुआ मेरा तन और डराती रात। आज तो चांद की चांदनी तक मुझे प्यार नहीं कर रही थी। आज से पहले तो चांदनी अपनी रोशनी में मुझे जैसे लोरी सुनाया करती थी और मैं डाली के झूले में सपने देखते हुए सो जाता था। आज की रात तो बहुत ही भारी थी। मैं अपनी मिट्टी में सनी आँखों से देख रहा था। कुछ ही दूरी पर एक पौधा था, जिसमें मेरी आँखें खुली थी, मैंने अंगड़ाई ली थी। इसने रोज सुबह मेरा चेहरा धोया था पर आज मैं अकेला था। मैं सुबकने लगा और थककर सो गया। सुबह की पहली किरण ने मुझसे कोई बैर न रखा। वह मुझ पर भी समान रूप से छा गई और वहीं गौरैया मेरे पास चीं-चीं करती आई। मैं समझ गया था कि वो क्या करने वाली थी। उस दिन जब वो मुझे गहराई से सूंघ रही थी, तब मैंने सुना था वो कह रही थी कि अभी यह डाली में है, जब सूखकर गिर जाएगा तो इसे चीर-फाड़ कर मेरे बच्चे नाशते में इसका जायका लेंगे। वो कह रही थी कि मेरे भीतर एक स्वादिष्ट बीज है।

उफ, अब उसने चोंच से मुझे उठाया और मुझे लेकर उड़ चली। ओह, जैसे-जैसे गौरैया उड़ रही थी, मेरे तन से माटी साफ होकर झड़ रही थी। मैंने बादल को अपने सूखे तन से महसूस किया। ओह, आसमान कितना सुन्दर था। तभी मैं अचानक गिर गया। मैं हवा में गोता लगाता जिस ज़मीन पर जा गिरा, दरअसल वहीं पर उस गौरैया को कुछ अनाज के दाने दिख गए थे। उसने अचानक मुझे त्याग दिया।

कुछ ही पल बीते होंगे कि बरसात होने लगी। मैं माटी, बूंद और किचड़ से लतपथ होकर बेहोश हो गया। तीन दिन बाद मेरी आँखें खुली। मैंने कुछ महसूस किया। मेरे तन पर कुछ हरापन-सा था। ओह, ये क्या हुआ। मैं सोच ही रहा था कि एक काली चींटी मेरे पास से होकर गुजरी। ओह... पौधा, हरा पौधा, ओह... स्वागत, ऐसा कहकर उसने मुझसे बातें की और रेंगती हुई आगे चली गई। एक सप्ताह बाद तो मैं जैसे कोई बालक था। हरा भरा बालक...। सूरज की रोशनी से मैं कद बढ़ा रहा था। एक महीने बाद फिर बरसात आई। मैं भीगता रहा और सो गया। सुबह आँखें खुली तो मैं खुद को देखता रह गया।

ओह, मैं तो अब हाथ-पैर बढ़ा रहा था। दो महीने बाद मुझ पर फूल और फल भी आ गए। ओह... अच्छा, तो उस दिन हवा ने मुझे नया जीवन देने के लिए गिरा कर माटी में मिला दिया था। अहा... अब समझ आ गया था कि यह तो जीवन-चक्र है।



हिंदी प्रोत्साहन योजना 2022-23 के विजेता



श्री नरपत
वरिष्ठ लेखापरीक्षक



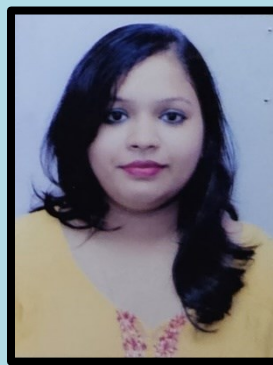
श्री भगत राम
सहायक पर्यवेक्षक

पखवाड़ा-2023 के दौरान आयोजित हिंदी प्रतियोगिताओं के विजेता

मसौदा एवं टिप्पण लेखन प्रतियोगिता



श्री हेमराज मीना
स.ले.प.अ.
(प्रथम पुरस्कार)



श्रीमती नेहा गर्ग
स.ले.प.अ.
(द्वितीय पुरस्कार)



श्री बिजेन्द्र प्रसाद
स.ले.प.अ.
(तृतीय पुरस्कार)

अनुवाद प्रतियोगिता



श्री साजन श्रीवास्तव
स.ले.प.अ.
(प्रथम पुरस्कार)



श्री बिजेन्द्र प्रसाद
स.ले.प.अ.
(द्वितीय पुरस्कार)



श्री मानवेन्द्र झा
स.ले.प.अ.
(तृतीय पुरस्कार)



श्रीमती नेहा गर्ग
स.ले.प.अ.
(चतुर्थ पुरस्कार)

वाद-विवाद प्रतियोगिता



श्री दीपक नरवाल
स.ले.प.अ.
(प्रथम पुरस्कार)



श्री सचिन कुमार
वरिष्ठ लेखापरीक्षक
(द्वितीय पुरस्कार)



श्रीमती हेमलता शर्मा
लेखापरीक्षक
(तृतीय पुरस्कार)

निबंध प्रतियोगिता



श्री दीपक नरवाल
स.ले.प.अ.
(प्रथम पुरस्कार)



श्री मानवेन्द्र झा
स.ले.प.अ.
(द्वितीय पुरस्कार)



श्री अंकित काँवत
लेखापरीक्षक
(तृतीय पुरस्कार)



श्री प्रिन्स कुमार सानिया
स.ले.प.अ.
(चतुर्थ पुरस्कार)

भाषा एवं शब्द ज्ञान प्रतियोगिता



श्री हेमराज मीना
स.ले.प.अ.
(प्रथम पुरस्कार)



श्री साजन श्रीवास्तव
स.ले.प.अ.
(द्वितीय पुरस्कार)



श्री प्रिन्स कुमार सानिया
स.ले.प.अ.
(तृतीय पुरस्कार)



श्री रोहित माथुर
स.ले.प.अ.
(चतुर्थ पुरस्कार)

हिंदी पखवाड़ा-2023 रिपोर्ट

संघ सरकार की राजभाषा नीति के अनुपालन में केंद्र सरकार के कार्यालयों में प्रतिवर्ष राजभाषा हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने के उद्देश्य हेतु सितंबर मास में हिंदी दिवस/सप्ताह/पखवाड़ा/माह का आयोजन किया जाता है। इसी क्रम में, प्रधान निदेशक (लेखापरीक्षा) उद्योग एवं कॉर्पोरेट कार्य, नई दिल्ली-110002 कार्यालय में हिंदी पखवाड़े का आयोजन किया गया। इसका शुभारंभ हिंदी दिवस एवं तृतीय अखिल राजभाषा सम्मेलन (14 एवं 15 सितंबर, 2023) को पुणे, महाराष्ट्र से हुआ।



राजभाषा कीर्ति पुरस्कार (प्रथम पुरस्कार) 2022-23 से मुख्यालय के श्री भवानी शंकर, महानिदेशक (राजभाषा) को सम्मानित करते हुए श्री भर्तृहरि मेहताब, माननीय उपाध्यक्ष (संसदीय राजभाषा समिति), डॉ. भानु प्रताप पवार (स्वास्थ्य राज्य मंत्री), श्री अजय कुमार मिश्र, राज्यमंत्री (गृह मंत्रालय), श्री हरिवंश, उप-सभापति (राज्यसभा), श्री भानु प्रताप वर्मा (एमएसएमई राज्यमंत्री), ले. कर्नल रामनरेश शर्मा (निदेशक, केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान)....(क्रमशः बाएं से दाएं)

कार्यालय में हिंदी पखवाड़ा-2023 के आयोजन हेतु प्रधान निदेशक महोदया के निदेशानुसार विभिन्न समितियों/निर्णायक मंडल का गठन किया गया। हिंदी दिवस (14 सितंबर, 2023) के पुणे से शुभारंभ के पश्चात हमारे कार्यालय में दिनांक 19.09.2023 व 20.09.2023 को कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें दिनांक 19.09.2023 को संकाय सदस्य श्री राजबीर, हिंदी अधिकारी ने उपस्थित सभी अधिकारियों/कर्मचारियों को संघ सरकार की राजभाषा नीति और कार्यालयीन हिंदी के व्यावहारिक पहलूओं पर जानकारी दी तथा दिनांक 20.09.2023 को कार्यशाला के लिए अतिथि संकाय सदस्य के रूप में श्रीमती ज्योति शर्मा, स. प्रोफेसर, शिवाजी कॉलेज (दिल्ली विश्वविद्यालय) को आमंत्रित किया गया जिन्होंने हिंदी भाषा की लिपि और विकास पर विस्तृत चर्चा की एवं कार्यालय के कर्मिकों को हिंदी में कार्य करने के लिए मार्गदर्शन किया।



हिंदी कार्यशाला सितंबर-2023 अतिथि संकाय सदस्य, प्रधान निदेशक, उप-निदेशक
एवं हिंदी अधिकारी (क्रमशः दाएं से बाएं)



हिंदी कार्यशाला सितंबर-2023 के समापन पर अतिथि संकाय सदस्य, श्रीमती ज्योति शर्मा,
स. प्रोफेसर, शिवाजी कॉलेज (दिल्ली विश्वविद्यालय), हिंदी पखवाड़ा-2023 आयोजन समिति के
सदस्यों तथा कार्यशाला प्रतिभागियों के साथ।

हिंदी कार्यशाला के संपन्न होने के पश्चात हिंदी पखवाड़ा-2023 के दौरान दिनांक 21.09.2023 से 26.09.2023 तक विभिन्न प्रकार की प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया और इन प्रतियोगिताओं का निर्धारण भी कार्यालय के सभी अनुभागों से प्राप्त सुझावों एवं पखवाड़ा आयोजन समिति के अनुशंसा के आधार पर ही किया गया। सर्वप्रथम दिनांक 21.09.2023 को कार्यालय के सम्मेलन कक्ष में मसौदा एवं टिप्पण लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसके निर्णायक मंडल सदस्य श्री ईश्वर सिंह, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी थे। इसके पश्चात इसी दिन अपराह्न में कार्यालय के मनोरंजन कक्ष में अनुवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया तथा इसके निर्णायक मंडल सदस्यों में श्री प्रशान्त, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी एवं श्रीमती रश्मि वर्मा, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी थे।

प्रतियोगिताओं के इसी क्रम में दिनांक 22.09.2023 को कार्यालय के मनोरंजन कक्ष में वाद-विवाद प्रतियोगिता आयोजित की गई जिसकी निर्णायक मंडल सदस्य श्रीमती शुचि शर्मा, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी थी। वाद-विवाद प्रतियोगिता में विषय का चयन डॉ द्वारा किया गया तथा विषय के रूप में “क्या आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस नौकरियां छीन लेगा” निर्धारित किया गया। इसके बाद दिनांक 25.09.2023 को मनोरंजन कक्ष में निबंध प्रतियोगिता आयोजित की गई जिसका विषय “भारत के संबंध में जी-20 शिखर सम्मेलन के निहितार्थ” डॉ द्वारा ही तय किया गया तथा इस प्रतियोगिता के निर्णायक मंडल के सदस्यों में श्री प्रसून अवस्थी, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी एवं श्रीमती अर्चना, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी थे। हिंदी पखवाड़ा-2023 आयोजन समिति के समन्वक एवं निर्णायक मंडल सदस्य श्री राजबीर, हिंदी अधिकारी एवं श्रीमती एन.के.सुभाषिनि, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी, हिंदी पखवाड़ा-2023 आयोजन समिति सदस्या ने दिनांक 26.09.2023 को भाषा एवं शब्द ज्ञान प्रतियोगिता का आयोजन प्रभावी ढंग किया। इस प्रतियोगिता में कार्यालय व्यवस्था से संबंधित विषयों पर विजुअल्स के माध्यम से प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। गत वर्ष की भाँति इस वर्ष भी प्रतियोगिता में सबसे अधिक प्रतिभागी रहे। इस प्रतियोगिता में भाग लेने वाले कर्मिकों ने राजभाषा के प्रति संवैधानिक एवं नैतिक दायित्व को सरलता से समझा और प्रतियोगिता में भागीदारी के साथ-साथ ज्ञान भी अर्जित किया।

हिंदी पखवाड़ा-2023 में प्रतियोगिताओं के आयोजन के पश्चात दिनांक 29.09.2023 को पुरस्कार वितरण एवं समापन समारोह का आयोजन किया जाना था। प्रधान निदेशक महोदया के निदेशानुसार हिंदी पखवाड़ा-2023 पुरस्कार वितरण एवं समापन समारोह का आयोजन दिनांक 05.10.2023 को किया। हिंदी अधिकारी ने कार्यक्रम में हिंदी पखवाड़ा-2023 के दौरान संचालित कार्यक्रमों/गतिविधियों के विषय में विस्तृत रूप से बताया। साथ ही हिंदी अधिकारी ने पुणे में आयोजित तृतीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन के दौरान भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा

विभाग को राजभाषा कीर्ति पुरस्कार वर्ष 2022-23 में प्रथम स्थान से सम्मानित किए जाने पर कार्यालय के सभी कार्मिकों को बधाई दी। हिंदी अधिकारी ने भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग द्वारा पूर्व में भी वर्ष 2020-21 में राजभाषा कीर्ति पुरस्कार में प्रथम स्थान, वर्ष 2012-13 इंदिरा गांधी राजभाषा पुरस्कार में प्रथम स्थान तथा वर्ष 2011-12 में इंदिरा गांधी राजभाषा पुरस्कार में द्वितीय स्थान प्राप्त करने के बारे में भी कार्मिकों को अवगत कराया।

पुरस्कार वितरण एवं समापन समारोह के दौरान प्रधान निदेशक महोदया ने कार्यालय के सभी अनुभागों में से वर्ष 2022-23 के दौरान हिंदी में श्रेष्ठ कार्य निष्पादन हेतु **स्थापना अनुभाग** को **चल वैजयंती शील्ड** प्रदान की और सभी प्रतियोगिताओं के विजेताओं (प्रथम- ₹2500, द्वितीय- ₹2000, तृतीय- ₹1500 एवं चतुर्थ-₹500), कार्यशाला में उपस्थित सभी अधिकारियों/कर्मचारियों और हिंदी प्रोत्साहन योजना सत्र 2022-23 के विजेताओं को प्रमाण-पत्र दिए तथा प्रोत्साहन/पुरस्कार राशि का भुगतान सीधे संबंधित कार्मिक के बैंक खाते में किया गया। प्रधान निदेशक महोदया ने हिंदी पखवाड़ा-2023 के आयोजन समिति/निर्णायक मंडल के सभी सदस्यों के साथ-साथ सभी प्रतिभागियों को हिंदी पखवाड़ा-2023 के सफल संचालन हेतु बधाईयां दी तथा भविष्य में हिंदी पखवाड़ा के आयोजन को इसी उत्साह और उमंग से जारी रखने के निदेश दिए।



**प्रधान निदेशक महोदया, वर्ष 2022-23 में हिंदी में श्रेष्ठ कार्य निष्पादन के लिए
स्थापना अनुभाग को चल वैजयंती शील्ड से सम्मानित करते हुए।**



हिंदी पखवाड़ा-2023 पुरस्कार वितरण एवं समापन समारोह में प्रधान निदेशक महोदया एवं निदेशक(प्रशासन) हिंदी प्रोत्साहन योजना एवं प्रतियोगिताओं के प्रतिभागियों/विजेताओं को प्रमाण-पत्र से सम्मानित करते हुए।



हिंदी पखवाड़ा पुरस्कार वितरण एवं समापन समारोह के दौरान सुश्री एस. आह्लादिनी पंडा (प्रधान निदेशक महोदया), निदेशक, उप-निदेशक हिंदी पखवाड़ा-2023 आयोजन समिति के सदस्यों के साथ।

वर्ष-2023 के दौरान आयोजित राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकें



हिंदी कार्यशाला (सितंबर-2023) के कुछ यादगार लम्हें...



हिंदी पखवाड़ा-2023 पुरस्कार वितरण एवं समापन समारोह के अनमोल पल...





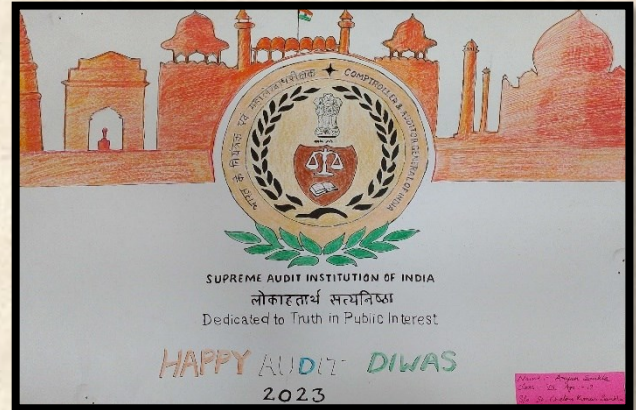


कार्यालय में ऑडिट सप्ताह के दौरान कार्मिकों के बच्चों द्वारा चित्रकला का प्रदर्शन



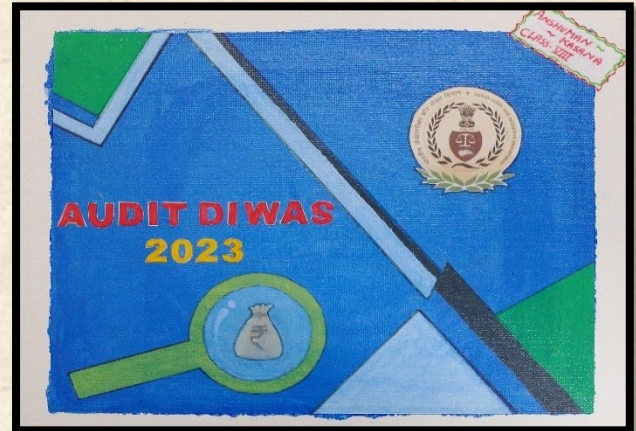
आर्यन सांकला

पुत्र श्री चेतन कुमार सांकला
(लेखापरीक्षक)



अंशुमन कसाना

पुत्र श्री योगेन्द्र कसाना
(लेखापरीक्षक)



निलेश

पुत्र श्री दयाशंकर
(वरिष्ठ लेखापरीक्षक)



आश्वी कसाना

पुत्री श्री योगेन्द्र कसाना
(लेखापरीक्षक)





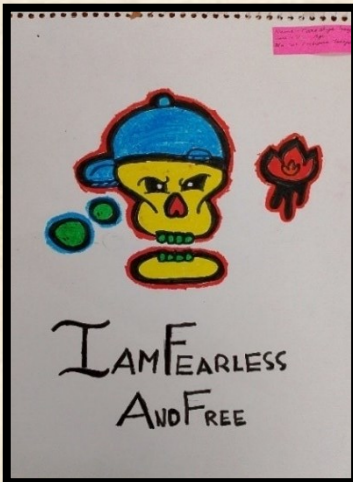
रिशभ

पुत्र श्री कृष्णा कुमार
(सहायक पर्यवेक्षक)



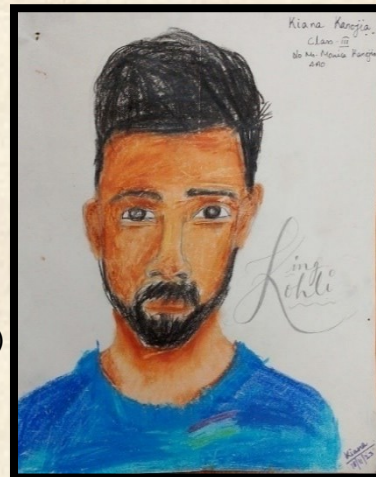
हर्षिता कनोजिया

पुत्री श्रीमती मोनिका कनोजिया
(सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी)



आराध्या तनेजा

पुत्री श्रीमती अर्चना तनेजा
(वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी)

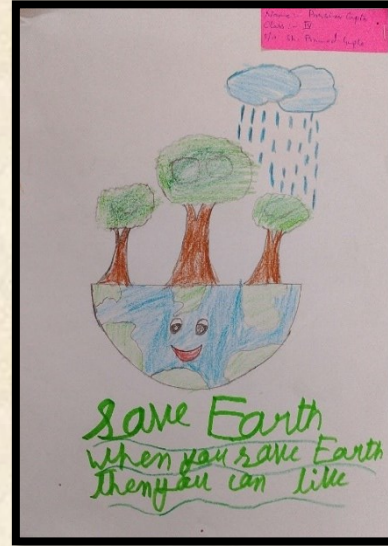


किआना कनोजिया

पुत्री श्रीमती मोनिका कनोजिया
(सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी)



नंदना मिश्रा
पुत्री श्रीमती नैन्सी
(वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी)



पार्श्व गुप्ता
पुत्र श्री प्रमोद कुमार गुप्ता
(वरिष्ठ लेखापरीक्षक)



अथर्व कुमार
पुत्र श्री अजय कुमार
(वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी)



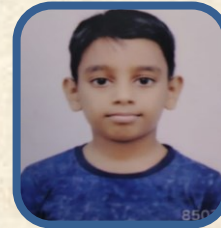
आराध्या जैन
पुत्री श्रीमती नीरज जैन
(वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी)



आद्विक शर्मा
पुत्र श्रीमती हेमलता शर्मा
(लेखापरीक्षक)



सुहानी तनेजा
पुत्री श्रीमती अर्चना तनेजा
(वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी)



अनुज कुमार
पुत्र श्री रमेश कुमार
(वरिष्ठ लेखापरीक्षक)

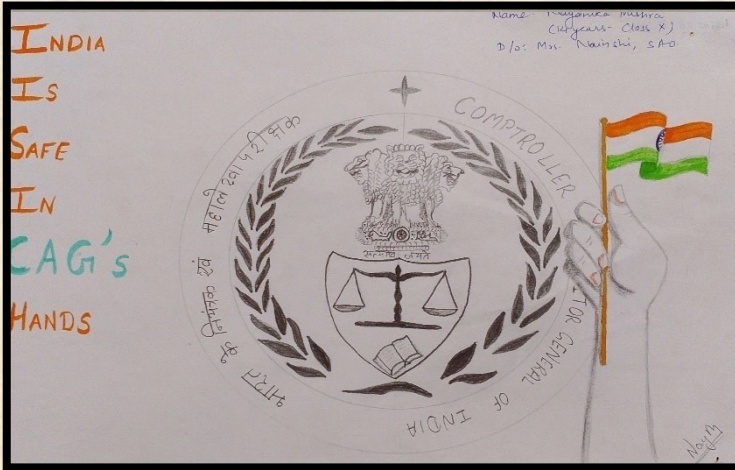


प्रांजल राय
पुत्र श्री अजय कुमार
(सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी)



साक्षी

पुत्री श्री दयाशंकर
(वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी)



नयनिका मिश्रा

पुत्री श्रीमती नैन्सी
(वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी)



इंटर मिनिस्ट्री क्रिकेट टूर्नामेंट-2023 के विजेता खिलाड़ियों के साथ प्रधान निदेशक महोदया, श्रीमती एस. आह्लादिनी पंडा एवं कार्यालय के अन्य अधिकारी



दिल्ली ऑडिट ने जीता इंटर मिनिस्ट्री क्रिकेट टूर्नामेंट का खिताब



स्पोर्ट्स एज

मेन ऑफ द मैच लोकेश शर्मा के शानदार खेल 77 रॉट आउट और 2 विकेट 14 रन देकर सिद्धांत डोबल 32 के शानदार

खेल की बदौलत दिल्ली ऑडिट ने विनय मार्ग ग्राउंड में खेले जा रहे इंटर मिनिस्ट्री क्रिकेट टूर्नामेंट में होम मिनिस्ट्री को 8 विकेट से हराकर खिताब जीता। होम मिनिस्ट्री की ओर से



गौरव गौतम ने 51 राहुल यादव ने 48 रानो की पारी खेली लोकेश शर्मा को टूर्नामेंट का सरवेस्ट खिलाड़ी के पुरस्कार से नवाजा गया।

संक्षिप्त स्कोर -

होम मिनिस्ट्री: 137 रन 5 विकेट 20 ओवर गौरव गौतम 51, राहुल यादव 48, लोकेश 2/14

दिल्ली ऑडिट: 141 रन 2 विकेट 14 ओवर लोकेश शर्मा 77 रॉटआउट सिद्धांत डोबल 32।

अभिमत

“आपके स्नेह के हम आभारी हैं कि आपने हमें अपने अभिमत भेजे। पत्रिका के बेहतर भविष्य के लिए इसी प्रकार अपनी राय एवं सुधार संबंधित सुझाव देकर हमारा उचित मार्गदर्शन करते रहें।”

रचनाकारों से अनुरोध

- नव इन्द्रप्रस्थ के अगले अंक के लिए सभी रचनाओं का स्वागत है।
- कृपया रचनाकार अपने मौलिक, अप्रकाशित, अप्रसारित एवं श्रेष्ठ रचनाएं प्रकाशन के लिए भेजें।
- रचना के साथ अपने 02 पासपोर्ट साइज फोटो तथा रचना की मौलिकता एवं अप्रकाशित होने का प्रमाण पत्र अवश्य लगाएं।
- सुपाठ्य रचनाएं कागज की एक और 02 टंकित/लिखित प्रतियाँ (सॉफ्ट/हार्ड) सहित भेजें।
- रचना का उपयुक्त शीर्षक दिया हो।
- रचनाकार रचना भेजते समय उसकी एक प्रति अपने पास सुरक्षित रख लें।

***कार्यालय एवं राजभाषा से संबंधित लेखों का विशेष रूप से स्वागत है।**

संपादक (नव इन्द्रप्रस्थ)

राजभाषा अनुभाग

प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा, उद्योग एवं कॉर्पोरेट कार्य,

ए.जी.सी.आर. भवन, आई.पी. एस्टेट,

नई दिल्ली - 110002

फोन. नं. 011-23702699

ई-मेल: rajbhasha.del.ica@cag.gov.in



SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा, उद्योग एवं कॉर्पोरेट कार्य,
ए.जी.सी.आर. भवन, आई.पी. एस्टेट, नई दिल्ली - 110002